प्रकाशक :
प्राची प्रकाशन
ग्रा०+पो० : मेंहथ
भाया : झंझारपुर, मधुबनी

•

•

प्रकाशन तिथि : जानकी नवमी
११ मई २००३ ई०

•

प्रथम संस्करण : ५०० प्रति

•

मूल्य : ३५/ टाका

•

मुद्रक :
अरुण प्रिंटिंग प्रेस
९-बी, सिकदरपाड़ा स्ट्रीट,
कोलकाता - ७०० ००७
दूरभाष : २२३८-४२०१

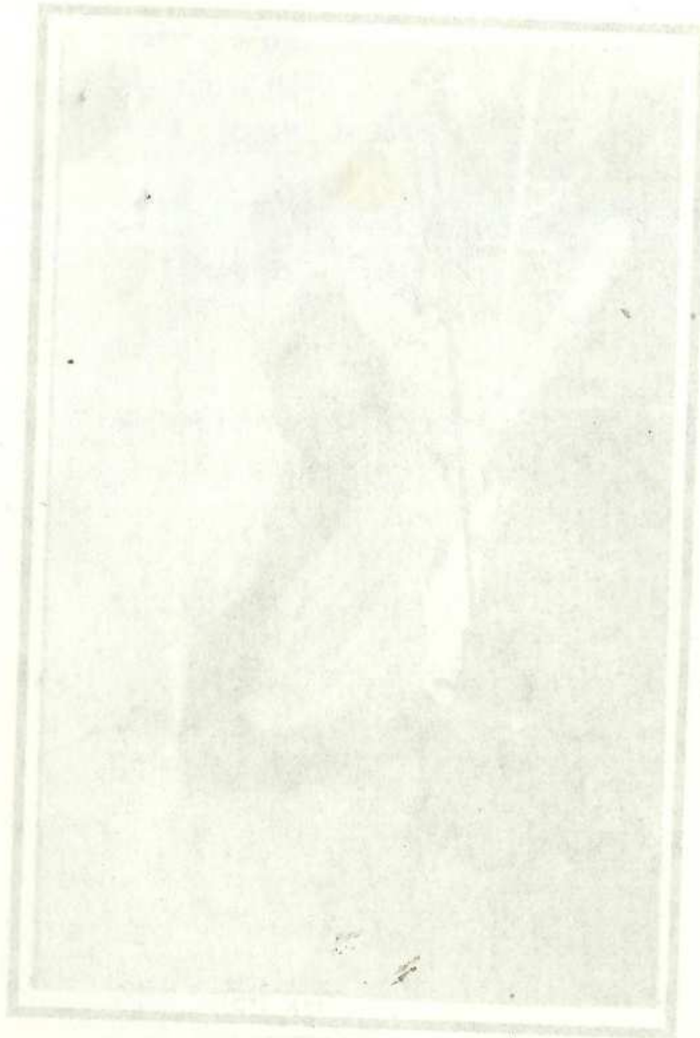
DHADHAIT NAVKI KANIYANK LAHAS
MAITHILI DRAMA *by* ANAND KUMAR JHA

श्रद्धांजलि



पूजनीया मैयाँक आशीर्वाद सँ पाओल साहित्यिक अभिरुचि मे प्रस्फुटित एहि कृति कें श्रद्धांजलि स्वरूप हुनके अर्पित करैत –

– आनन्द कुमार झा



हर्षित मोन सँ –

'टाकाक मोल', 'कलह' आ 'बदलैत समाज' पोथीक अपार सफलताक लेल हम अपन समस्त शुभचिन्तकक प्रति आभार व्यक्त करैत छीआ संगहि थमबैत छी अपनेक हाथ मे लेखनीक चारिम प्रसाद ''धधाइत नवकी कनियाँक लहास''। एहि मंगलमय बेला मे श्रद्धासुमन अर्पित करै छी स्व० प्रभास कुमार चौधरी कें जिनका सँ क्षणिक भेंट मे ग्रहण कएल आशीर्वाद सँ आइ मिथिलाक उच्चकोटिक साहित्यकार लोकनिक मध्य बैसक सुअवसर प्राप्त होइत रहैत अछि। हुनके सबहक प्रोत्साहन सँ आइ हमर लेखनी गतिशील बनल अछि। हम नाम लेबए चाहब श्री फूलचन्द्र मिश्र 'रमण', श्री अशोक जी, डा० धनाकर ठाकुर, श्री रामानन्द झा 'रमण' जिनक आशीर्वाद निरन्तर पबैत रहैत छी। विशेष रूपे चर्चा करए चाहब श्री सुशीलजी एवं श्री गंगा झाजीक सबहक जिनक सुझाव सँ 'धधाइत नवकी कनियाँक लहास' पोथी मे निखारे टा नहि आश्चर्यजनक चमकी आबि गेलैक अछि। माँ एवं बाबूजीक प्रति नतमस्तक रहैत छी जे निरंतर पोथी प्रकाशनक लेल तत्पर रहैत छथि। अपन छोट भाई त्रिलोक आ अमरेन्द्रक प्रति स्नेह रहैत अछि जकर मेहनत सँ पोथी आहाँ सबहक हाथ जाइत अछि। रिंकुक नाम लेब जे जीवन संगनीक संग-संग हमर परम शुभचिन्तक रूप मे ठार रहैत छथि। हमरा साहित्य-जीवनक पथ पर सदा अग्रसर करैत रहैत छथि। अन्त मे हम आभारी छी श्री प्रभाकर अभिनय समिति, गन्धवारिक जे प्रथम मंचनक जे भार होइत अछि तकरा पूरा करैत सुन्दर ढंग सँ सफल मंचन केलथि। तऽ आऊ, पढ़ू आ मंचन करू 'धधाइत नवकी कनियाँक लहास'।

– आनन्द कुमार झा

एहि नाटकक मादे

नाटक दृश्यकाव्य अछि। ई साहित्यक सभसँ सशक्त विधा मानल जाइछ। सभ श्रेणीक दर्शक एक संगे एहि सँ प्रत्यक्ष रूपें प्रभावित होइत अछि। नाटकक माध्यम सँ देश, समाज आ व्यक्तिगत परिस्थिति आ समस्या सभ सँ दर्शक कें साक्षात्कार कराओल जाइत अछि। मनुक्ख चेतनशील प्राणी अछि। ओकर सुषुप्त चेतना कें सामूहिक रूप मे जगयबाक काज जतेक सशक्त रूपें नाटक करैत अछि, साहित्यक आन विधा तेना नहि कऽ सकैत अछि। क्रांति स्तर पर जनचेतना अनबाक सभसँ सफल एवं सरल साहित्यिक विधा नाटक होइछ। कहबाक तात्पर्य जे नाटक एहन विधा अछि जाहि सँ दर्शक प्रत्यक्ष रूपें अपना कें चिन्हबाक प्रयास करैत अछि। मुदा, ई सभ निर्भर करैत छैक नाटककारक अंतर्दृष्टि आ संप्रेषणीयताक कौशल पर।

आधुनिक नाटक अर्थात मंच (स्टेज) बहुत उन्नतिशील भऽ गेल अछि। स्टेज क्राफ्ट बहुत परिमार्जित भऽ गेल छैक। नित नव-नव टेकनिकक प्रयोग होइत रहैत छैक। प्रतिस्पर्धाक भावना साहियिक एहि विधा मे सर्वोपरि छैक। कहबाक तात्पर्य जे नाटक प्रयोगधर्मी साहित्यिक विधा अछि। आइ वैह नाटक सफल मानल जाइछ जे प्रतिस्पर्धा लेल प्रस्तुत होइत अछि। तें नाटककार कें आधुनिकतम प्रयोग सभसँ संपर्कित आ अवगत भेनाइ अनिवार्य भऽ जाइत छैक।

आनन्द कुमारक ई चारिम नाटक प्रकाशित भऽ रहल छनि। टाकाक मोल पढ़लाक बाद पाठक कें ई धारणा बनल छलैक जे अग्रिम बेर नाटककार निश्चित रूपें आधुनिक नाटकक टेकनिक सभसँ परिचित होयबाक प्रयास करताह। मुदा, तकर सभक अभाव आबो खटकिते अछि। प्रस्तुत नाटक द्वारा नाटककार एकटा समटल परिवारक विखण्डनक चित्र उपस्थित करबाक प्रयास कयलनि अछि। वस्तुत: ई घर-घरक समस्या अछि। एकटा कांच वयसक अविवाहित नाटककार एकटा नव विवाहित दम्पत्तिक आधुनिक परिवेशगत मनोभाव कें चित्रित करबाक प्रयास कयलनि अछि, जाहि मे अपनाभरि बयसानुसार सफल भेल छथि। अतेक गंभीर समस्या कें जे कि उन्नतशील भारतवर्षक घर-घरक समस्या अछि, अनुभवरहित बयसक परिचायक थीक, आ तें क्षम्य सेहो।

परिवारक अर्थ आब पति पत्नी आ ओकर बच्चा सँ होइत अछि। ई अनर्गल बात अछि तकरा चरितार्थ करबाक प्रयास भेल अछि। मंच सज्जा, रूप आ परिधान, प्रकाश, ध्वनि जौं निर्देशक पर छोड़ि देल जाय तैयो भाषा तऽ नाटककारक होइत छैक।

संवाद तऽ नाटकक जान होइत छैक। सम्वाद जतेक समीचीन हेतैक, नाटक ततबे प्रभावोत्पादक। ध्यातब्य जे संबादे नाटक कें कवितामय आ अभिनय कौशल कें गतिशील आ विभिन्न भंगिमा लेल उत्प्रेरित करैत छैक। कहबाक तात्पर्य जे निर्देशक वैह करैत अछि आ करबा लेल बाध्य अछि जे नाटककार चाहैत अछि।

एकटा बात निर्विवाद सत्य अछि जे आनन्दजी में प्रवाह छनि। मुदा, प्रवाह बाढ़िक पानि जेकां चारूकात छिड़िया जाइ छनि। आवश्यक छैक तकराएकटा निश्चित सीमा मे बान्हिकऽ निश्चित स्थान पर लऽ जाएब। परिवेश सँ सभ सँ बेसी प्रभावित होइछ मनुक्ख। संग-संग ईहो सत्य छैक जे परिवेशक निर्माण मनुक्ख अपने करैत अछि। एहिठाम साहित्यकारक भूमिका होइत छैक परिवर्त्तनकामी रचना करब, आ एकटा नियोजित दृष्टि देब।

प्रस्तुत नाटकक विषयवस्तु नाटक कें मंचन करबा लेल संस्था सभ कें प्रेरित कऽ रहल अछि। कोलकाता सहित कतोक स्थान मे, खासकऽ मिथिला मे नाटकक मंचन भेल अछि आ भऽ रहल अछि। ई शुभ बात अछि। मंच पर नाटक बहुत प्रशंसित भेल अछि। एकटा भरल-पुरल परिवारक माने आ ओकर समृद्धि संकुचित अर्थ मे कतेक भयावह आ कष्टपूर्ण होइत छैक, से मिथिलाक बेटी-पुतोहु अवश्य बुझतीह। आधुनिकताक अर्थ बिखण्डन कथमपि नहि भऽ सकैछ। सम्बन्ध बूझब आ तकरा बनाकऽ राखब संगठित परिवारक मूल मंत्र छैक जकरा अभाव मे सुखमय सम्पन्नताक कल्पना निराधार भऽ जाइछ। यैह अपनत्वक सम्बंध मनुक्ख कें आन जीव सँ श्रेष्ठ बनबैत छैक जे सुख-दुःख मे एक-दोसरक लेल प्रयासरत आ अपस्यांत रहैत अछि। घर गृहणीक होइत छैक। कुशल गृहणी परिवार कें जोड़ैत अछि। यैह तऽ छैक आदर्श स्त्रीक धर्म। सुशीला एहने कर्त्तव्य परायण पत्नीक रूपमे छथि। मुदा आधुनिक होयबाक नाम पर, स्वार्थ मे आन्हर भेल पत्नी एकेरत्ती मे कोना एकटा सुसम्पन्न परिवार कें तहस-नहस कऽ दैछ तकर परिवेशगत चित्रण नीक भेल अछि।

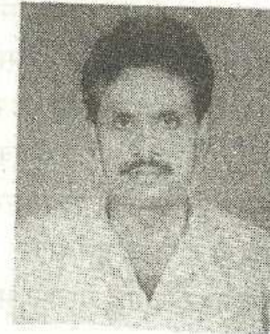
एकटा बात हम बिसरऽ नहि चाहब, अर्थात स्पष्टतः आ सुहृद् मोने कहऽ चाहब जे आनन्द कुमार सस्ता प्रख्याति कें तिलांजलि दऽ अपना कें स्थापित करबाक चेष्टा अवश्य करताह। मैथिली कें तकर बड़ जरूरति छैक। मैथिली मे सशक्त नाटकक अभाव छैक। हिनकर प्रतिभा अवश्य एकदिन अपन प्रभाव देखाओत से विश्वास अछि। ●

–सुशील झा
गवर्नमेंट कॉलोनी, ओ-३,
बजबज, कोलकाता

नाट्य साहित्य मे पारंगत / *दीनानन्द मिश्र, निर्देशक*

प्र० अ० स० गन्धवारि

'धधाइत नवकी कनियाँक लहास' मात्र कल्पने टा नहि अपितु यथार्थ कहल जाय तऽ संदेह कठिन भऽ जायत आजुक परिवेश मे अपन पति अपन बेटाक भावनाक संग जिबैक लालसा पौराणिक संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था कें जेना खण्डित कऽ रहल अछि। साहित्य समाजक दर्पण मानल गेल अछि आ तकर सशक्त माध्यम अछि नाटक। अन्य कोनो कलात्मक वा सृजनात्मक अभिव्यक्ति सँ नाटक वेशी रचनात्मक अभिव्यक्ति करबाक शक्ति रखैत अछि। एहि मे मनोरंजनक अंश सेहो वेशी रहैत छैक आ जकर पूर्णता सफल कलाकार आ निर्देशक पर निर्भर छैक।



श्री प्रभाकर अभिनय समिति के माध्यम सँ हर वर्ष दुर्गा पूजनोत्सवक अवसर पर या अन्य कोनो अवसर पर हमरा लोकनि मैथिली नाटकक मंचन करैत आबि रहल छी। परंच किछु दिन सँ मैथिली नाटकक अकाल बुझना जाइत छल जाहि अकाल के दूर भगौलनि अपन लेखनी क प्रवाह सँ श्री आनन्द कुमार झाजी। आनन्द कुमारजीक प्रतिभावान लेखनीक पहिल परिचय ''टकाक मोल'' नाटक रूप मे भेल। काटर विरोधी ई नाटक बड़ सशक्त एवं प्रभावकारी छल जे हमरा लोकनि कें बड़ प्रभावित केलक आ दर्शक सेहो एकर भूरि-भूरि प्रसंशा केलनि। तकरा बाद हिनकर लिखल नाटक 'कलह' जे प्रायः दुखान्त नाटक अछि दर्शक कें प्रभावित तऽ करैत अछि। मुदा एकर अन्त किछु अपूर्ण बुझना जाइत अछि। ओना ई नाटक सामाज के प्रभावित करैत अछि। ओना लेखक द्वारा नाटक के आओर किछु आगू बढ़ेबाक निर्देशन

हिनका दोषमुक्त कऽ दैत अछि। आ तेसर नाटकक रूप मे हिनक लिखल एकटा नाटक "बदलैत समाज" जाहि मे आजुक सामाजिक व्यवस्था पर पूर्ण चोट कएल गेल अछि। ई दर्शक कें प्रभावित करबाक पूर्ण क्षमता रखैत अछि एवं मंचोपयोगी अछि। ई नाटक सामाजिक व्यवस्थाक विरुद्ध एकटा आन्दोलन बुझना जाइत अछि। पुनः हमरा सबक समक्ष आएल "धधाइत नवकी कनियाँक लहास" पहिल मंचनक अवसर। नाटक पूर्णता तखने पाबि सकैत अछि जखन ओकर सफल मंचन भऽ सकए आ से प्रमाण दर्शक द्वारा एहि नाटक के भेटलहि। निर्देशक के दृष्टि सँ एकटा कमी बुझना गेल एहि नाटक मे जे हास्यक किछु कमी छैक तैयो एकर सरसता बनल रहैत छैक आ दर्शक के बान्हि कऽ रखबा मे इ नाटक पूर्ण सफल अछि। नाटकक पूर्वाद्ध जहिना गंभीर अछि तहिना एकर उतरार्द्ध सुखान्त भऽ जाइत अछि जे शिक्षाप्रद अछि।

जेष्ठ भाई मंत्रेश्वर पिताक समान अपन कर्त्तव्यक पालन करैत आ भाउज सुशीला जे अपना दियर के माय-बापक अभाव के अनुभव नहि होमए दैत छैक वैह समीर जखन पढ़ि लिखकऽ एकटा नीक पद पबैत अछि आ ओकर विवाह होइत छैक तऽ ओकर पत्नी शीखा ओकर विवशता भऽ जाइत छैक। परिवार सँ विमुख हेबाक लेल ओकरा विवश करैत छैक आ ओ परिवार विखण्डित होमए लगैत अछि। मुदा जखन शिखा कें अपन गलतीक ज्ञान होइ छै आ ओ परिस्थिति कें बुझैत अपन गलती स्वीकार करैत अछि तऽ एक बेर फेर ओ परिवार सुख आ समृद्धताक दिश अग्रसर होमए लगैत अछि। एहि नाटक के माध्यम सँ लेखक आजुक परिपेक्ष्य मे एकटा नव संदेश देबाक प्रयास करैत बुझना जाइछ।

आ अन्त मे आभारी छी लेखकक जे नाटकक निर्देशन मे पूर्ण स्वतंत्रता देलनि अपना अनुसार निर्देशन करबाक। ई हुनक उदारता कहल जाए तऽ अतिशयोक्ति नहि होएत। ई एहिना अपन लेखनी कें प्रवाह दैत रहथि आ मैथिली साहित्यक नाट्य विधा कें समृद्ध करैत रहथि ई हमर शुभकामना। ●

Forwarding Letter

It is my good fortune to get an opportunity to write about a young, intelligent and energetic writer, Mr. Anand Kumar Jha who is well-versed in 'Maithli' language. He has been in constant touch with the social ills of the society he hails from. All the inadequate approaches which mar the progress of the individual have inspired the writer to bring them to book through his writing skills. He has already written dramas like 'Kalah', 'Takak Mole', 'Hathat Parivatan' etc. He wants to make the people realize how selfish they are when they demand dowry, a heinous crime, mounting unemployment, drastic discord in the family and involvement of narrow political dogmas, through his writings.

I have seen some of his dramas in 'Mahajati Sadan' and feel proud of him. 'Badlait Samaj' is his recent gift and also 'Dhadhait Nav Kaniyank Lahas' for the society.

This drama revolves round a newly married 'Kaniya' (wife) who neglects the family's basic need and enjoys her own life. How far a lady can mislead her husband and ignore the importance of joint family and its necessity is shown in true sense of the terms. The so-called 'Navki Kaniya' turns a deaf ear from the poverty stricken family and makes it hell. The writer has tried his level best to present a clear picture of the name assigned to the drama. However, the old proverb, "All is well that ends well", comes true when the dramatist, A. K. Jha has brought the family together under one umbrella.

Shikha, the 'Kaniya' realises her mistakes and misbehaviour with elder members of the family does not even wants ornaments but she desires to be loved by them. Happiness is the only medicine which cures all diseases. This enriches the drama's concept.

Mr. Jha's language is lucid and crystal clear. He is a persistent and enthusiastic reader of Maithili literature. I congratulate him on his excellent work. I do believe that the common people as well as the academicians will appreciate his worth in the field.

Ashok kumar Jha, Teacher, Calcutta Puplic School, Kolkata-59

श्री प्रभाकर अभिनय समिति, गन्धवारि

द्वारा

प्रथम मंचन : दिनांक : १२/१०/२००२

सौजन्य : श्री-श्री १०८ दुर्गापूजनोत्सव समिति'०२

स्थान : श्री दुर्गा मंदिर-प्रांगण, गन्धवारि

—: पात्र-परिचय :—

पुरुष-पात्रक भूमिका मे

पात्र	*सम्बन्ध*	*अभिनायक*
मंत्रेश्वर	समीरक ज्येष्ठ भाय	दीना नन्द मिश्र 'हेमन'
समीर	शिखाक पति	धीरेन्द्र कुमार मिश्र 'धीरन'
शोभन	एकटा ग्रामीण	शंकर जी मिश्र
रामलाल	घरक नौकर	अजय कुमार मिश्र
श्यामलकान्त	ऑफिसक चपरासी	नवल कुमार मिश्र
डाक्टर	एकटा डाक्टर	डा० ईशनाथ झा
रीतेश	समीरक भातिज	मास्टर दीपक

स्त्री-पात्रक भूमिका मे

सुशीला	समीरक भाउज	चंदन कुमार झा 'चंचल'
शिखा	समीरक कनियाँ	संतोष कुमार मिश्र

विभिन्न भूमिका निर्वाहक

शुभ चिन्तक : डा० इशनाथ झा (*अध्यक्ष, प्र० अ० स०*)
श्री विनोद मिश्र (*सचिव, प्र० अ० स०*)

पूर्ण सहयोग : श्री उग्रकान्त मिश्र (*पूर्व निर्देशक, प्र० अ० स०*)

सलाहकार : श्री भीमनाथ मिश्र (*अधिवक्ता*) एवं श्री विजय चन्द्र झा

मंच व्यवस्था : श्री विनय कुमार कर्ण

रूप सज्जा : श्री विकास कुमार झा

प्रकाश व्यवस्था : श्री हेमन्त कुमार मिश्र

गीत एवं संगीत : श्री सुरेन्द्र मिश्र एवं वीरेन्द्र मिश्र

मुख्य अतिथि : श्री दिगम्बर ठाकुर, *पूर्व शिक्षा मंत्री,* बिहार सरकार
श्री आनन्द कुमार झा, लेखक
श्री काशीकान्त ठाकुर, *स्थानीय मुखिया*

निर्देशक : दीना नन्द मिश्र

अंक : पहिल : : दृश्य : पहिल

(समीर आ शिखाक विश्राम घर। मंच पर इजोत होएबा सँ पूर्व स्त्रीक हिचुकब। आस्ते-आस्ते मंच पर इजोत पसरैत अछि। समीर गंभीर मुद्रा मे कुर्सी पर बैसल देखल जाइछ आ शिखा पलंग पर पड़लि हिचुकि रहलि अछि। इजोत पसरैत हिचुकब आर जोर होइछ।)

समीर : *(शिखा दिश बढ़ैत)* हमरा किछु नहि फुरा रहल अछि। आहाँक एकतरफा निर्णय, आहाँक ई जिद्द पारिवारिक समस्या बनि चुकल अछि। आहाँ कें एहि बातक कोनो परवाहि नहि अछि जे लोक की कहत।

शिखा : आहाँक कहबाक अर्थ इएह ने भेल जे लोकक नीक बेजाय सुनि हम अपन शख-मनोरथ कें डाहि ली।

समीर : शिखा, के कहलक आहाँ कें जे मात्र शहरे टा मे शख-मनोरथ पूरा होइत छैक। आखिर गामो मे तऽ लोक रहिते अछि आ खूब प्रसन्न भऽ कऽ रहैत अछि।

शिखा : आहाँ साफ तरहे किएक ने कहैत छी, आहाँ नहि लऽ जायब। किएक लऽ जायब। लोक अपना कनियाँ कैं अपने संगे लऽ जाइत अछि, हम तऽ आहाँक कनियाँ नहि, धौरबी छी।

समीर : शिखा, आहाँक मन:स्थिति किछु बेशिये ओझरायल अछि। कने स्थिर भऽ शान्त दिमागि सँ सोचू। महीना दू महीना आहाँ कैं एहि घर मे पैर रखना भेल कि नहि.भेल, जूति चलेनाइ शुरू कऽ देलहुँ। आहाँ कें संगे लऽ गेलाक बाद भैया-भौजी की सोचती आ की कहत समाजक लोक से कनिको सोचइ छिअइ?

शिखा : तहन हमहूँ अपना गाम चलि जायब। जहन हमर अप्पन क्यो एतऽ नहि रहत तऽ फेर असगर एतऽ हम की करब।

समीर : मात्र हमरा गेला सँ आहाँ असगर भऽ जायब! घर मे भैया-भौजी छथि आ रीतेश अछि। एतेक लोक कें अछैत आहाँ अपना कें एसगर किएक बुझैत छी? आहाँक गेलाक बाद ओ सब एसगर भऽ जेताह, एना सोचियौ आहाँ।

शिखा : अहूँ तऽ बाहर मे एसगरे रहब। एतऽ तऽ भैया-भौजी संगे छथि।

समीर : शिखा, अहाँ कें संगे राखऽ मे कोनो तरहक आपत्ति नहि अछि। लोक सगरे एतबे बाजत जे भाए-भाउज अपन खुशीक अर्पण कऽ पढ़ा-लिखा कऽ एकरा योग्य बनेलकै आ से पैर पर ठाढ़ होइते देरी संग छोड़ि देलकै। ई बात हमरा एकदम नीक नहि लगैत अछि।

शिखा : तऽ की आहाँक विचारे एहि बनाबटी कर्तव्यक कारणे हम अपन सजाओल सपनाकें तिलांजलि दऽ दी ? *(कने बिलमैत)* लोक जे कहतै से कहौक। तें हम अपना सुखक प्रवाहित धारा कें छिड़िआय नहि देबए चाहैत छी।

समीर : एकरा आहाँ बनाबटी कर्तव्य कहै छियै ? आखिर आहाँक कहब की अछि ? फरिछा कऽ बाजू।

शिखा : *(हिचुकैत)* हमर संगी सबहक हमरा बाद बियाह भेलैक। सब बिनु दुरागमने बरक संग बाहर गेल। सब शहर मे खुशी सँ रहैत अछि। हमरा कपार मे भगवान की लिखि पठेलनि से नहि जानि।

समीर : *(शिखा कें पाँज मे भरैत)* हमर शिखाजी! हुनकर सबहक पतिदेव हमरा जकाँ गाम आ शहरक बीच पुल नहि बान्हि सकल हेताह। फेर,अहाँक संगी सबके शहर मे रहला सँ आहाँक 'प्रेस्टीज डाउन' भऽ जायत से कोनो तर्क नहि भेल।

शिखा : *(फराक होइत)* एहन ठठ्ठा हमरा नीक नहि लगैत अछि। बुझलौं जे आहाँ अपना संगे लए जयबा लेल प्रस्तुत नहि छी। आहाँ लेल भैया-भौजी सभकिछु छथि। ठीक छइ, हमहूँ हुनके सभ लेल अपन सुख-मनोरथ डाहि लेब। मुदा एकटा बात कान खोलिकऽ सुनि लिअ। जिद्दी आहाँ होयब से भऽ सकैत अछि मुदा हमरा जिद्दक आगाँ आहाँक निर्णय नहि टिक सकत। आहाँक भैया-भौजीक खातिर हम अपना संसार कें डाहि नहि देबैक।

समीर : शिखा, अप्पन आ आनक घर मे पैर दैत देरी आरंभ कऽ देलौ आहाँ! एहि घर कें स्वर्ग बनाबऽ लेल अप्पन वर्खोक समय आ परिश्रम जे तिल-तिल के बहा देलनि तिनका बारे मे कनिको नहि सोचि सकलौ आहाँ ? जिनकर सिनेह आ परिश्रम हमरा एत' धरि पहुँचा देलक तिनका हम कोना आन बुझियौ ? हम तऽ कल्पनो नहि कऽ सकैत छी।

शिखा : *(जोड़ सँ सिसकैत)* हम नहि मानव एकटा बात आहाँक ....

(सुशीलाक प्रवेश। देखि शिखा खिन्न भाव सँ थोरेक दूर जाइत)

सुशीला : बौआ किएक बात कें तखन सँ चिरौनी केने छी। कनियाँ कें मोन होइत छनि संगे जयबाक तऽ की हेतैक। लेने ने जइयनु। आइ काल्हि कें नहि अपना परिवार कें संगे रखैत अछि। आब जमाना बदलि गेलैक अछि। हमर सबहक जमानाक बात करब आ सोचब से आब संम्भव नहि।

समीर : भौजी ई तऽ आहाँक हृदयक उद्गार अछि। हम आहाँ सँ सहमत छी। मुदा एखन शिखा कें एहि घर सँ परिचयो नहि भेलनि अछि। भैया कें हम अपन मुँह कोना देखा सकबनि।

सुशीला : नहि, आहाँ से सब नहि सोचू। कनियाँ के एखन नेनमति छनि। अनुभव हेतनि तऽ अपने सभटा बुझि जयथिन। देखबै, एक दिन अपने घर अयबाक जिद्द करतीह।

समीर : भौजी, हमरा एखन कतबो सूगा-मैना जेंका पढ़ायब तऽ ई बात कदापि नहि मानव। एसगर आहाँ घर मे रहब। भानस-भात, फेर भैयाक देखभाल ओम्हर रीतेशक पढ़ाई -लिखाई एतेक एसगर आहाँ कँ सम्हरनाइ। विवाह घर मे लोकक कमी कँ देखिकऽ केलहुँ।

रीतेश : *(प्रवेश)* यो कक्काजी! बाबू मना केलनि अछि आंगन मे नोंक-झोंक करऽ सँ। आ नवकी काकी कें किछु नहि कहऽ लेल। जल्दी सँ दलान पर आबैक लेल कहलनि अछि। बुझलियैक ?

समीर : हँ यो, सबटा बुझलियैक। आहाँ एकोबेर पढ़ैक लेल बैसलियै की ?

रीतेश : पढ़िते छलहुँ। पढ़ैत काल अढ़बैत छथि। तहन जे रिजल्ट खराब होयत तऽ हमरा दोष नहि देब।

समीर : एहन बात नहि बाजी आहाँक रिजल्ट खराब भइये नहि सकैत अछि। भौजी कने हमरा कनिआँ कें बुझा-सुझा दियौन। दुर्गापूजा मे गाम आयब तऽ अवश्ये लऽ जेबनि। रहिहथि तहन संदति ओतहि। आ एकटा बात तहन फेर हम अनबो नहि करबनि। चलऽ हौ रीतेश। एखन दिल्लीक लड्डू नहि खेलथुन्है तोहर काकी।

(समीर आ रीतेश संग बाहर होइछ।)

(इजोत बन्न होइत अछि।)

*****

अंक : पहिल : : दृश्य : दोसर

(स्थान : मंत्रेश्वर बाबूक दलान । खाट पर ओ पड़ल छथि। सटले एक भाग मे पटिया ओछाएल अछि जाहि पर रीतेशक किताब - कॉपी छिड़िआएल अछि, उच्च स्वर लगबैत शोभनक प्रवेश ।)

शोभन : मंत्रेश्वर भैया! मंत्रेश्वर भैया छी यो! (मंत्रेश्वर उकासी करैत उठैत छथि।)

मंत्रेश्वर : के ? शोभन, आबह, बैसह।

शोभन : भैया, आब मोन केहन अछि ?

मंत्रेश्वर : आब ठीके छी। दू दिन सँ दबाइ खाइत छी। खूब आराम बुझना जाइत अछि।

शोभन : भैया, ओना कहबाक जे नहि चाही सैह कहबाक साहस जुटा रहल छी।

मंत्रेश्वर : तों तऽ अप्पन लोक छह। तोरा कि हम कहियो आन बुझलिअ।

शोभन : ताँ तऽ साहसो कऽ रहल छी। सुनबा मे आएल अछि जे नवकी कनियाँ चारि साँझ सँ अन्न -पानि बारने छथि।

मंत्रेश्वर : हमरा जहाँ तक पार लागल, केलियनि। समाजक सामने सबटा छैहे। नीक कि अधलाह सबटा समाजे कहत कि समीरक आत्मा जनैत हेतनि। हम तऽ एतबे बुझइ छिअइ जे माय-बाप जे भार दऽ गेल छलाह तकरा कहुना हम पार लगयबाक चेष्टा कएल ।

शोभन : आहाँ अपना छोट भाय लेल नहि ,जेना बेटा लेल लोक करैत अछि तेना केलियनि। समीर तऽ बुझनहुँ नहि होएताह जे बाप मरि गेल छथि। जमऽने किदन भऽ गेलै। बियाह होइते अप्पन-आन लोक फरिछाबए लगइ छइ। आहाँक आशीर्वाद सँ सरकारी नौकरियो भेटि गेलनि।

मंत्रेश्वर : लोक कि सभटा अपने करैत अछि। सभटा भगवानक लीला थिकनि। एतबे बुझि लैह जे भगवान जाहि काज लेल पठौने छथि तकरा निमाहि ली बढ़िया जेंकाँ। ओना यश–अपयश तऽ ऊपरवालाक हाथ मे छनि।

शोभन : एखने खाइत काल रेवतीक माय कहलनि अछि। एक–दू दिन सँ आहाँ कने चिंतित लगैत छलहुँ। पुछबाक मोन होइत छल। मुदा नहि पुछइ छलौं जे आहाँ अपनहि कहब जँ कोनो तेहेन सन बात हेतइ तऽ। सोचलौं बात कऽ लेला सँ मोन कने हल्लुक भऽ जाएत। कहाँदन आहाँक नवकी कनियाँ बड़ कड़ा मिजाजिक छथिन।

मंत्रेश्वर : हँ शोभन, एक दिन हमहूँ तों एहि उमेरक रही। सबटा तऽ मोने अछि। की तों बिसरि गेलहक ?

शोभन : *(मुस्किआइत)* नहि भाई, होअय तऽ जे सदिखन कनियाँ सटले रहथि, आ हम हुनका हरदम देखिते रही। आहाँ सँ की लाथ, कनिकेक तऽ छोटाइ–जेठाइ अछि।

मंत्रेश्वर : *(उत्साहित होइत)* तहन तऽ बुझिते छहक हम किएक बाधक होयब। कनियोंक एखन नेनमति छनि; तें बात सभतरि पसरि गेल। नहि तऽ ककर घर बाँचल छै। यैह अवस्था छैक सम्हरबाक मुदा से होइत नहि छैक। बेसी लोक बहकिते अछि आ जिनगी सार्थक नहि भऽ पबइ छइ।

(समीर आ रीतेशक प्रवेश। रीतेश चुपचाप पटिया पर बैसि पढ़ऽक सुरसार करैछ। समीर ठाढ़ रहैछ।)

शोभन : आबह बैसऽ!

(समीर चुपचाप बैसि जाइछ। रातुक स्तब्धता व्याप्त रहैछ)

शोभन : चुप्पी हमरे तोड़ऽ पड़त भरिसक।

समीर : *(शोभन कें अवसर नहि देबऽ चाहैछ।)* भैया केहन मोन अछि ?

मंत्रेश्वर : हँ, लगैये जेना दस–बीस वर्षक जिनगी भेटि गेल हो।

समीर : *(अधीर होइत)* नहि भैया, एना नहि बाजू। दसे–बीसे नहि। कम सँ कम दूटा बीस अवश्य राखल अछि, आहाँ लेल।

मंत्रेश्वर : हँ समीर, तों सब तऽ अवश्य चाहबऽ। शरीरे रहने सबटा छैक। ओतऽ जाकऽ नीके–ना रहिहऽ। चिट्ठी–पत्री लिखैत रहने बुझाइत रहत जे तों सोझाँ मे अहिना बैसल गप्प कऽ रहल छह। अतेक धरि नहि बिसरिहऽ।

समीर : भैया हमरा तऽ आहाँक चिन्ता अछि। दूध उठौना ठीक कऽ देलहुँ अछि। हमर सप्पत अछि, मना नहि करबइ। शोभन भैया कने देखबैन। भैया, कने खेत सभ बटाइ लगबा देबइ। दवाइ लेल तऽ भौजी धेआन रखबे करथिन। *(शोभन दिश तकैत)* अहीं कहू, एहन शारीरिक अवस्था मे काज कऽ हेतनि हिनका? तहन, ई हमरा पढ़ेलनि लिखेलनि आ मनुक्ख बनेलनि कियेक? समाज तहन होइछै कियेक ?

शोभन : *(मुस्किआइत)* हौ, हम तऽ तोरे मुँह सँ एहेन बात सुनइ छी। आइ काल्हुक छौड़ा सभ तऽ कहइ छइ–जेठ काज नहि करय से कतऽ लिखल छइ ?

मंत्रेश्वर : शोभन बात कें बहटाबऽ नहि। किछु बात करबाक अछि समीर सँ।

शोभन : मंत्रेश्वर भैया, बाजऽ दिअ हमरा। हम कहैत छी जे जेठक कर्तव्य छइ छोट कें पढ़ालिखा कऽ मनुक्ख बनेनाइ। तकर बाद की छोटक कर्तव्य नहि बनै छै ? कियो गाछ–वृक्ष रोपैत अछि, ओकर देखभाल करैत अछि से कियैक ? मुदा आश्चर्य! फूल–फल लगैत–लगैत सभटा आदर्श आ कर्तव्य ओ ताख पर राखि दैत अछि।

समीर : ओ स्वार्थी होइत अछि शोभन भैया जे अपन कर्तव्य आ कर्मठता सँ विमुख भए स्वार्थ मे भटकैत रहैत अछि। किन्तु भैया, आहाँ एना कियैक सुनबइ छी हमरा ?

शोभन : *(बात बदलि)* अरे, तोरा सन कतेक बुझनुक लोक जनम लैत अछि ? कतेक छोट मे तोहर बाप स्वर्गवासी भऽ गेलथुन। कोना ने कोना कऽ एतेक टा भेलह तों से की हम विदेश मे छलहुँ। भरि जन्म अप्पन जिनगी तोरा मनुख बनबऽ मे लगा देलनि मंत्रेश्वर भैया। जाहि गाछक सेवा केलनि से आब फरुआ भेलैये । ई सभ नहि बाजब तऽ बुझबहक कोना। मंत्रेश्वर भैया कोदारिक बले खेती कऽ आ ट्यूशन कऽ कऽ घर चलबैत तोरा पढ़ा-लिखा कऽ सरकारी नौकरीक पोस्ट तक पहुँचेलथुन्ह।

मंत्रेश्वर : शोभन, आब बन्न ने करह। तों की ई बात सब करैत छऽ? समीरक एखन उम्रे कतेक भेलैये। एखनो बच्चे अछि समीर। शोभन, कियो ककरो किछु नहि करैत अछि। जकरा कपार मे जे लिखल रहइ छइ, सैह होइत छैक।

(क्षणिक स्तब्धता व्याप्त रहैछ।)

समीर : भैया, एखन आहाँ कें आरामक जरूरति अछि। समय सभटा कहि देत। एखनो आ जिनगी भरि आहाँक जरूरति पड़त हमरा। कर्तव्यक उदाहरण हमरा लेल आहाँ सँ बढ़ि कऽ के भऽ सकैछ।

शोभन : वाह वाह! तों एकटा आदर्श स्वरूप छह अपना गाम मे। "कर्मप्रधान जग रचि राखा, जो जस करहिं सो तस फल चाखा।" *(फेर क्षणिक स्तब्धता व्याप्त होइछ। मंत्रेश्वर दीर्घ निःश्वास खीचैत अछि)*

मंत्रेश्वर : *(मुस्किआइत)* तों सब तऽ कतऽ ने कहाँ बहकि गेलहक। हैं समीर, हम जाहि लेल बजेलिअ से गप्पे तर पड़ि गेलइ।

शोभन : हैं समीर, भैया कें कहल पार नहि लगइ छनि। तें असल बात तऽर पड़ि गेलइ। सुनऽ कहाँदनि तों कनियाँ कें संगे लऽ जा रहल छहुन ?

समीर : *(शोभन दिस तकैत)* कोना लोक बुझइ छइ जे बाप तुल्य भाय कैं हम नकारि देबनि। आइये नहि सभदिन भैया हमर गार्जियन रहताह।

मंत्रेश्वर : नहि-नहि, आहाँ किछु मोन मे आन तरहक अर्थ जुनि लगाउ।

समीर : टोलक लोक एहने सन बात फुसफुसा रहल अछि। आने-माने बजैत अछि। हमहूँ अन्ने खाइ छी शोभन भैया। आहाँ अप्पन छी तें अतेक खोलिकऽ गप्प केलहुँ अछि। भैया दिस सँ ककरो आहाँ जबाब दऽ सकइ छियनि। *(दूनू हाथे कल जोड़ि ऊपर देखैत)* भगवती सँ यैह प्रार्थना अछि जे भैया-भौजीक संग परिवार मे सेवा करबाक हमरा मे क्षमता देथि। बस, एहि सँ बेसी हम एतबे कहब जे हम एखन बिवाह घर मे एकटा आर मनुक्ख लेल कयलहुँ अछि।

(एहि मध्य सुशीलाक प्रवेश होइछ।)

सुशीला : बौआ हमरो सभक तऽ किछु सौख-सेहन्ता अछि। घर मे मात्र मनुक्ख लेल लोक बियाह नहि करैत अछि। हम एखनो शरीर सँ अब्बल नहि भेलउहैं। जहिया आराम करैक लेल कहब हम टगि जाएब। की आहाँ सएह चाहइ छी ?

समीर : हमरा लगैत अछि सभटा आहाँ सब विचारि कऽ कऽ रहल छी। आहाँ सब हमरा सँ फारकती पाबऽ लेल हमर बिवाह करेलहुँ। हम आहाँ सबके बहुत तंग केलहुँ ने ?

मंत्रेश्वर : समीर आहाँ ई सब बात की बाजऽ लगलहुँ। बिवाह

भेला पर पत्नीक अधिकार पति पर सेहो बनैत छैक। जिनगीक ई अटूट बंधन होइत छैक।

समीर : माय, बापक अधिकार सँ बेसी ओहि भाई-भाउजक अधिकार जे पालि-पोसि एतेकटा बनेलक। शोणितक बन्धन सँ कोनो पैघ बन्धन होइत अछि, जे हमरा आहाँक नस मे विराजमान अछि ?

मंत्रेश्वर : समीर, एकटा आदर्श पति आहाँकें सेहो बनबाक अछि। आहाँ अपना कनियाँ कें प्रसन्न राखियेकऽ हमरा सभकें देखि सकै छी। आहाँ हुनका अपना संगे लइये जइयनु। देखबइ ओ अपने एहि घर कें अप्पन बूझऽ लगथिन।

समीर : हमर मोन नहि मानैये। (*आँखि सँ नोर खसऽ लगइ छइ)* हमर मोन कलुषित अछिये। सप्पत तऽ नहिएँ खेने छी जे हुनका नहिएँ लऽ जेबनि। एहेन कोन जिद्द होइ छइ भैया, जे मुँह सँ एकबेर निकलल से फेरल नहि जा सकइ छइ। चारू भाग सँ लोक यैह चाहैत अछि। आहाँक सुख सब छीनऽ चाहैत अछि।

मंत्रेश्वर : हमरा जमानाक भाषा मे बात करैत छी आहाँ। ओ जमाना दोसर जमाना छलैक। आबक जमाना, आबक जीबैक हाव-भाव बदलि चुकल छै। समीर आहाँक मोनक विचार मे परिवर्तन जरूरी अछि।

शोभन : औजी अहूँ सब क्री तहन सँ बात कें आमिल जेकाँ घोड़ि रहल छी। फरिछाकऽ कहियौक ने हौ बच्चा, भौजी सहनशील छथुन, अप्पन-आनक भावना हुनका मे नहि छनि। नवका लोक, नवका-नवका बात। एखुनका लोक मे ई हमर अप्पन बेटा छी, अपन पुतोहु छी तऽ अपन नाइत नातिन थीक- एहि अप्पन के झोंक मे दोसर सँ

आगाँ बढ़ैक लेल किछु करक लेल उताहुल भऽ जाइत अछि, तोंही कहऽ तोहर भौजी जँ ओना करितथुन तऽ आइ जे पोस्ट पौलह अछि से पबितऽ ? कूकुर-बिलाड़ि भेल रहितऽ।

सुशीला : एतेक छोट-छीन बातक लेल एना नून-तेल किएक सनै जा रहल छी, कनियाँकें मोन होइत छनि संगे रहबाक तऽ रहती, कुनू अनका संगे तऽ नहि जेती, एहि लेल एतेक घमरथन करबाक प्रयोजन नहि छै।

समीर : वाह भौजी; वाह.....कतेक जल्दी मे कहि देलियैक "कनियाँकें मोन होइत छन्हि संगे रहबाक तऽ रहती"। हम पूछैत छी, कनियाँ कहत चान पर चढ़बैक लेल तऽ की चान पर चढ़बैक लेल जायब। चढ़ा सकबनि आहाँ, मुदा हमर प्रत्युत्तर साफ तरहे सुनि लिअ। हम चानक इजोत देखा सकैत छी चान हाथ मे नहि दऽ सकैत छी।

सुशीला : चानो आनि कऽ पतिये दै छैक बौआ। आइ-काल्हि के नहि रखैत अछि संगे अपना परिवार कें। ई कोनो नव बात आहाँ नहि करब।

शोभन : समीर आब बड़ जिद्द कैलह। एकबेर घुमा अनहुन शहर सँ। कनियाँक सेहो जिद्द रहि जेतन्हि आ घरक कलह सेहो शांत हैत। परंच एकटा बात सुनि राखऽ। आइ तक जतेक लोक कनियाँ लऽकऽ बाहर जाइत अछि सब गाम परहक सुधि-बुधि बिसरि जाइत अछि। से मोन राखब। आहाँ तऽ बुझनुक छी। गाम परहक स्थिति सँ अनभिज्ञ नहि छी। भाई ओछाओन धेने छथि। खेती-पथारिक यैह हाल अछि। भातिजक पढ़ाई-लिखाई के धेआन मे रखबै।

(समीर ठाढ़ भऽ जाइत अछि।)

शोभन : की, चललऽ ? नीक तऽ नहिए लागल हेतह हमर बात ।

(समीर कुर्सी पर बैस जाइत अछि आ सामने शून्य मे तकैत अछि, जेना किछु हथोड़िया दैत होअय। मंत्रेश्वर कुहरैत उठैत छथि आ समीर लग ठाढ़ भऽ जाइत अछि।)

मंत्रेश्वर : *(समीरक माथ पर हाथ फेरैत)* तों चिन्ता नहि करह। वास्तव मे हमरो सेहन्ता छल जे क्यो परदेसिया घर मे होइतय। लोकक समांग कें सपरिवार नौकरी सँ छुट्टी मे अबैत आ फेर जाइत देखि सेहन्ता होइत छल। आब भगवान सुनलनि तऽ तों बगदि रहल छह।

समीर : भैया, मनुक्ख हारि जाइत अछि तऽ तकदीर कें दोष दैत छैक। विवाह तंऽ घर मे मनुक्ख लेल करौने रही। की मनुक्ख भेटल ?

मंत्रेश्वर : बताह जुनि होअ। जेहने समय देखी, तेहने बनि जाइ। हमरा घरक समस्या अछि, हम अपना ढंग सँ सोझराएब।

(समीर कानऽ लगैत अछि। सुशीला लग मे आबि जाइ छथि।)

सुशीला : *(हँसैत)* धुर जो, हम तऽ जनइ छलौं जे देयोर नहि बेटा कें पोसि रहल छी,आहाँ तऽ मौगी जेंका कानऽ लगलियै यो !

मंत्रेश्वर : *(अपन नोर पोछैत)* पाँच सँ तोरा पच्चीस वर्षक बनौलहुँ। आब जहन जीवन संघर्ष मे उतरि गेल छह तऽ कनै छह तों! एना कऽ-कऽ तों हमरा कएल धएल कें नष्ट कऽ रहल छह। हमरो कहियो कनैत देखने छह ?

(समीर ठाढ़ भऽ जाइत अछि।)

समीर : की आहाँ नहि कानि रहल छी ?

मंत्रेश्वर : हम तऽ तोरा देखिकऽ कानि रहल छी, अपना संतान कें देखिकऽ कानि रहल छी। समस्या कनला सँ नहि सोझराइ छइ। तोरा कनैत देखि अपन परिश्रम निरर्थक लागि रहल अछि, तँ कानि रहल छी,

(बजैत-बजैत मंत्रेश्वर कें ओकासी उठि जाइत छनि। समीर पकड़ि लैत छनि। सुशीला आ शोभन सेहो धऽ कऽ ओछाओन पर सुता दइ छनि। ओकासी थम्हऽ के नाओ नहि लऽ रहल छनि।)

(आस्ते आस्ते मंच अन्हार होइछ।)

****

अंक : प्रथम : : दृश्य : तेसर

(शिखा रूसलि सोफा पर बैसलि अछि। अटैची लऽ कऽ समीरक प्रवेश होइछ। शिखा कें देखि फराक भऽ चुपचाप बैसि जाइत अछि। दुनू चुपचाप। किछु क्षण स्तब्धताक बाद समीर तनाब मुक्त होइछ।)

समीर : *(शिखा लऽग मे जा)* समय कें जाइत–अबैत देरी नहि होइ छइ बस, तीस सँ चालिस टा पत्र माने लव लेटर······ बस तखन की छैक एकटा नीक पोथी भऽ जायत, *(फुसफुसाइत)* आहाँ एतऽ रहब तहने ने ओ पोथी सम्भव हेतइ।

(सुशीलाक प्रवेश। समीर फराक होइछ)

भौजी आउ, देखै छियनि हिनकर जिद्द *(मुस्किआइत)* या देवी सर्वभूतेषु माया रूपेण संस्थिता, चण्डीरूपेण संस्थिता······।

सुशीला : छोड़ू ई सब। क्षमा माँगियनु हिनका सँ। हम दुनू मे गप्प करैत देखऽ चाहैत छी।

समीर : हम तऽ गप्प करक लेल प्रस्तुत छी। आहाँक देयादनी...

सुशीला : *(मुस्किआइत)* कनियाँ, आहाँ क्षमा कऽ देलियनि तऽ ? मसकरिये तऽ ने भऽ रहल छइ एखन तक ?

समीर : मसकरी की करब हम।

सुशीला : हमरा सामने मे आहाँ कनियाँ सँ अपन भूल स्वीकार करू। चलू , मानू गलती।

समीर : भूल मानब। कियैक नहि मानब, जौं हमर भूल हैत तऽ ?

सुशीला : हँ–हँ! आहाँक सभ भूल अछि। सोझे–सोझ हमर कथा मानू। चलू , जल्दी करू ······।

समीर : जखन आहाँ कहइ छी तऽ अपराध निश्चय कयने होयब। पता नहि ई अपने कियैक नहि से सब कहलनि। तऽ अपने कने कहि सकैत छी,कोन अपराधक आरोप अछि ?

सुशीला : कहबी छइ 'उन्टे चोर कोतवाल कें डाँटे।' साहेब, आहाँ ऊपर बहुत बड़का अपराधक आरोप अछि।

समीर : *(मुस्किआइत अछि)* पहिने कहू तऽ।

सुशीला : आहाँ ऊपर आरोप अछि– आहाँ अपन चान सन सुन्नरि पत्नीक आँखि सँ नोर बहैत देखलाक बादो हुनका चुप करैक कोनोटा प्रयास नहि केलहुँ। तकर इनाम की भेटि सकैत अछि आहाँ कें, पता अछि ?

समीर : जज साहिबा सजा मंजूर अछि। सुनाउ अपने मुँह सँ दण्ड।

सुशीला : हँ तऽ पत्नी कें तड़पेबाक आरोप सिद्ध भेलाक बाद आहाँक पत्नी आहाँ कें आजीवन कुमार रहबाक दण्ड दऽ सकैत छथि। परंच आहाँक काँच उमेर के देखैत अदालत आहाँक सजा मे किछु नरमी करैत नाम मात्र ई सजा दऽ रहल अछि जे जतेक जल्दी भऽ सकय कनियाँक समान बान्हू आ हुनको लऽ जैयनु।

समीर : मुदा····! ठीक अछि जज साहिबाक दण्ड हमरा मंजूर अछि। तैं तऽ कहल जाइत छैक 'ब' सँ बिबाह 'ब' सँ बर्बादी। माने बिबाह भेल बर्बादी।*(शिखाक लगीच जाइत)* ओ माइ भाग्यविधाता, आइ एम सारी, भेरी–भेरी सारी। (I am sorry. Very very sorry.)

शिखा : *(खिन्न भावें)* यू मे गो। (You may go.) भगवानक लेल हमरा असगर छोड़ि दिअ।

समीर : असगर छोड़ि दिअ ? आहाँक दिमागी हालत ठीक तऽ अछि ? असगर रहि साध्वी–महत्मैन बनैक ठानि लेने छी की ?

शिखा : प्लीज (Please), एतए सँ एखन चलि जाउ, नहि तऽ किछु उनटा–पुनटा सुना देब।

समीर : आहाँ जायब की नहि से तऽ आहाँ कहब मुदा हमर जायब निश्चित अछि। ओ भाभीश्री, कने जल्दी करू, आब देरी भऽ रहल अछि।

सुशीला : कनियाँ, आब अहूँ अपन जिद्द छोरू। आखिर ओ तऽ गलती मानि लेलथि।

शिखा : एतए सँ एखन मुँह बन्द कऽकऽ चलि जाउथ। इएह सब तऽ विचारि-सिचारि कऽ हमर घरवाला कँे खराब कऽ कऽ राखि देलइथ्हें।

समीर : *(उत्तेजित स्वर)* शिखा…… ! जँ एहि सँ आगाँ एक शब्द मुँह सँ निकालहुँ तऽ हमरा सन खराब कियो नहि भेटत। हदक सीमा कँे आहाँ पार कऽ गेलहुँ। आहाँ हमर देवी तुल्य भाउज कें हमरा सोझा मे अपमान केलहुँ।

सुशीला : बौआ एतेक जल्दी आहाँक संयम कोना टूटि गेल ? कनियों कें एखन तामस उठल छन्हि। तामस-पीत पर मुँह सँ किछु निकलि जाइत छैक लोक कें।

समीर : आहाँ सब माथा पर चढ़ा कऽ हिनका रखने छी। तें बढ़ियाँ सँ सेवा-भाव भऽ रहल अछि। हिनका जखन तामस उठतन्हि तऽ हमरा भाई-भाउज कें गारि पढ़ती, अपमान करती। ई सहन आहाँ सब कऽ सकैत छी। हमरा बर्दास्तक बाहरक बात थीक।

सुशीला : बौआ, हमही गोर लगैत छी। कम सँ कम जाइयो काल मे हरहर खटखट जूनि करै जाउ।

समीर : एकटा बात हिनका साफ तरहे बुझा दियौन जे शहर-शहर के जे रट्ट लगेने छथि से गाम कँे बिसरनहि चलथु। हमरा बुझने ई गाम हिनका लेल पहिल आ अन्तिम बेर देखनाइ छन्हि।

(मंत्रेश्वर बाबू खकसैत लाठीक बले प्रवेश करैत छथि।)

मंत्रेश्वर : जाइयो काल शुभ-शुभ करै जाउ ने। एखन तक कनियाँ तैयार नहि भेलइथ। आब तऽ देरी होइत छन्हि।

सुशीला : *(शिखा कँे उठबैत)* आब जिद्द छोरू कनियाँ। जल्दी सँ तैयार भऽ जाउ। देरी भेला सँ गाड़ी छुटि जायत। आब बात जुनि काटू।

मंत्रेश्वर : कनियाँ आब झमेला खतम ने करथु। लोक चारू दिस सँ कान पथने अछि। घरक बात घरे मे सोझरा जेबाक चाही। ई हमरा घरक रीत थीक।

(सुशीला शिखा कें उठा कऽ भीतरक कोठली दिस लऽ जाइत छथि। किछु काल मंच शांत रहैत अछि।)

समीर : भैया! जखन कखनहुँ, ककरो आंगन मे स्त्रीगणक कुकुर -कटौझ सुनैत छलहुँ तऽ ओहि आंगनक पुरुख पर बड़ जोरक तामस उठैत छल। मोन कहैत छल केहन मौगीयाह मनुक्ख अछि। अपन पत्नी कें हौंट-दबार मे नहि रखने अछि। हम सोचैत रहैत छलहुँ हमर जे पत्नी आओत तऽ एहि तरहक बेबहार सँ दूर राखब। सबटा निरर्थक सोच। असत्य! एहि तरहक नारि अपन सुखक बास्ते परिवारक प्रत्येक सदस्य कें गार्त जीवन जीवऽ पर बेबस कऽ दैत अछि।

मंत्रेश्वर : समीर! ओ आहाँक पत्नी थिकी। एकटा आदर्श पतिक मुँह सँ पत्नीक निन्दा केनाइ शोभा नहि दैत अछि। खराब वा नीक पत्नी, पत्नी होइत छैक। आब तऽ रास्ता हुनके संग काटऽ पड़त।

समीर : जिनगीक पथ पहाड़ सन आ अन्धकारमय बुझाइत अछि भैया। आहाँ ओहि नारीक प्रति न्याय करैत छी जे पैर रखिते स्वर्ग सन घर कें नर्कमय बना देलक।

मंत्रेश्वर : पुरुष कैं एतेक जल्दी हिम्मत नहि हारबाक चाही। आहाँ चिन्ता जुनि करू। सबटा ठीक भऽ जायत।

समीर : हमरा पढ़ा-लिखा कऽ योग्य बनेलहुँ। जकर नीक जकाँ दक्षिणा भेटि रहल अछि। कतेक सपना सजाओल छल हमर नौकरी भऽ जायत। घरक स्थिति ठीक भऽ जायत। भैया-भौजी आराम सँ रहती। भाइ रहैत बाप बनि कर्तव्य पूरा केलहुँ। ओहिना छोटक कर्तव्यक पालन करब। आहाँक ऋणी समीर ऋणिये रहि जायत। ठीके कहैत छलइथ शोभन भैया, कतेक आशा लगा कऽ गाछ रोपि ओकर सेवा केलहुँ जे मीठ फल देत। बड़ दुःख सँ कहए पड़ि रहल अछि भैया, ओहि गाछक सब डारि सँ नीमक फल निकलि गेल।

मंत्रेश्वर : ओह समीर······ तों एतेक बुझनुक भऽ कऽ चिन्ता किएक करैत छऽ। सबटा ठीक भऽ जायत। कनियाँ एखन नव छथि। एहि घरक रीति-रिवाज सँ पूर्ण अवगत नहि भेली। धीरे-धीरे सबटा बुझि जेथिन्ह। *(शिखाक बनिठनि कऽ प्रवेश। पाँछा सँ एकटा डलिया एवं अटैची नेने सुशीलाक प्रवेश।)*

सुशीला : आब गप्प सम्पन्न करू। देरी तऽ पहिनहि भऽ चुकल अछि। बौआ, कनियाँ पहिल बेर शहर जा रहल छथि। तें कने ध्यान दऽ रखबनि।

मंत्रेश्वर : कनियाँ, इहो समीर पर ध्यान रखिहथि। ओ बढ़ि कऽ तार भऽ गेलहें। एखन एकर उम्रे की भेल हें। जँ तामस पीत पर किछु बाजियो दिये तऽ सहि लेब। दुःख नहि करब। *(हकमैत, हरबराएल रीतेशक प्रवेश)*

समीर : आस्ते ······ आस्ते ······ एतेक हकमैत किएक छी ? की भेल, रिक्सा भेटल की नहि ?

रीतेश : एकोटा रिक्सावला नहि अबैत छल। ओ तऽ हम गेलहुँ तें, नहि तऽ पएरे-पएरे ग्यारह नम्बर बस सँ स्टेशन जाइ पड़ितै।

समीर : रिक्सावाला कतए अछि ?

रीतेश : रिक्सा कटाँसक ओहिपार ठाढ़ केने अछि। चलू ककाजी, आब हमर फीस निकालू।

सुशीला : ककाजी के पहिने गोर लगहुन, हरघड़ी तोरा पाइये चाही। अजुका बाद सँ के देतौ पाइ।

रीतेश : गोरे लगैक तऽ फीस माँगि रहल छिअनि।

समीर : ऐं यौ, आहाँ हमरा गोर लागब तकर हमरा सँ फीस लेब?

रीतेश : ककाजी, आइ काल्हि सोझे ठार रहला सँ फीस लगैत छैक। फेर हमरा तऽ एतेक लोकक बीच झुकऽ पड़त।

समीर : *(पाइ दैत)* लिअ, ई रहल आहाँक फीस। *(रीतेश पाइ लऽ कऽ घसकऽ चाहैत अछि। समीर मुस्की रूपें कान पकड़ि घुरबैत अछि।)*

समीर : चललौं कतऽ। फीस तऽ लऽ लेलियैक, गोर के लगतैक?

रीतेश : *(हँसैत)* ककाजी, नहिये मानबैक, गोर लगा कऽ रहबैक ······ चलू गोर लागि दैत छी, आखिर फीस तऽ एडभान्स देने छी। *(हँसैत रीतेश गोर लगैत अछि, फेर डलिया उठाऽ)* ककाजी, जल्दी चलू रिक्सा वाला घुरि कऽ चलि जायत। *(रीतेश प्रस्थान करैत अछि। समीर भैया आ भौजी कें गोर लगैत अछि। समीर इशारा सँ शिखा कें गोर लगैक लेल कहैत अछि। खिन्न भावे शिखा देयादनी कें गोर लगैत अछि। समीर ,मंत्रेश्वरबाबू , सुशीला आ रीतेशक आँखि नोर सँ भरि जाइत अछि।)*

समीर : भैया कोनो काज उद्यम आब नहि करक अछि। ठंढा सँ एकदम बचि कऽ रहब। *(भाउज सँ)* भौजी कने भैया कें दवाइ समय-समय सँ खुएबनि।

(किछु क्षण ठहरलाक बाद दुनू हाथ मे अटैची लऽ प्रस्थान करैत

अछि। मंत्रेश्वर आ सुशीला किछु दूर अरिआतलाक बाद आपस घूमि दीर्घ निसास छोड़ैत छथि।)

मंत्रेश्वर : चलू, आपस भऽ जाउ। आब बहुत दूर चलि गेल। समीरक भौजी, एकहि दुनियाँ मे चाहियो कऽ ककरो कियो नहि होइत अछि। काल्हि तक ओ समीर छोटे भाइ टा नहि आज्ञाकारी बेटाक समान छल। एहि घर मे एकाएक किएक परिवर्तन आबि गेल ? समीरक भौजी, ज्येष्ठ भऽ ईश्वर हमरा किएक जन्म देलथि ?

सुशीला : छोड़ू एहिसब बात कें । ई तऽ संसारक रीति थीक। एतए अपन-आनक बाढ़ि आबि गेल अछि। अपन खातिर दोसरक क्षति कऽ रहल अछि लोक।

मंत्रेश्वर : एकटा बात कहू ? आहाँ कहियो हमरा संग ओना कहाँ केलहुँ, जेना एखन समीरक संग कनियाँ कऽ रहल छथि। कोना करितहुँ। आहाँ तऽ साक्षात लक्ष्मीक रूप छी। जहिया सँ आहाँ एहि घर मे पैर रखलहुँ, उन सँ दून भऽ गेल। परंच, कतए बहि कऽ चलि गेल हमर स्वप्न। शोणितक बीच दरारि किएक फाटि गेल समीरक भौजी!

सुशीला : छोड़ू ने ई सब बात। जकरा भाग्य मे जे लिखल रहैत छैक सैह होइत अछि। दोसराक धन पर कखनहुँ सपना नहि सजाबी। एकरे कहल जाइत छैक लोभ। दोसरक धनक जामे तक एक कणक ऋणी रहैत अछि ततेकाल ओकर अपन उन्नति रुकल रहैत छैक।

मंत्रेश्वर : आइ समीर दोसर भऽ गेल!

सुशीला : आर नहि तऽ की ? हम सब अपन कर्तव्यक पालन केलहुँ। नीक केने जँ नीक होइत हेतैक तऽ भगवान हमरा सबहक खराब नहि करता। बौआ जतेक प्रसन्न रहता, सुखी सम्पन्न रहता, हमरा खुसिये हैत।

मंत्रेश्वर : परंच आहाँ एतेक विह्वल किएक भऽ रहल छी ?

सुशीला : जाइ सँ कनिये पहिने कनियाँ बजलथि इएह सब विचारि-सिचारि कऽ हमर घरवाला कें खराब कऽ कऽ राखि देलैथ। *(कहैत कानए लगैत अछि।)*

मंत्रेश्वर : समीरक भौजी, आहाँ बुधियारि भऽ कनैत छी! धुर बकलेलही! जूनि कानू........*(सुशीला कनैत रहैत अछि। तखनहि रीतेश आबि जाइत अछि। ओकरा छाती सँ लगा लैत अछि। आस्ते-आस्ते मंच अन्हार होइत अछि।)*

******

अंक : द्वितीय : : दृश्य : पहिल

(मंत्रेश्वरबाबू खाट पर सुतल छथि। सुशीला पैर दबा रहल छन्हि। रीतेश पटिया पर बैसि पढ़ि रहल अछि। सुशीलाक आँखि मे पानि भरैत छनि। रीतेश उदास मुद्रा मे सुशीलाक समक्ष आबि ठाढ़ भऽ जाइत अछि।)

रीतेश : तों किएक कनैत छैं माँ! काका-काकी हमरा सबकें छोड़िकऽ चलि गेलथि तऽ की हेतैक। हमहुँ कने पढ़ि-लिखि लेब फेर बाहर चलि जायब। हमरो कुर्सी पर बैसइ बला नोकरी भऽ जायत। फेर तऽ खूब रास पाइ कमाएब। काका जी आ काकीजी कें कहियो नहि टोकबैन्ह।

शोभन : *(प्रवेश)* की यौ बुदरुक, किनका नहि टोकबैनि ?

रीतेश : ककाजी आ काकीजी कें।

शोभन : से की बात यौ ? ओ सब की आहाँक केलथि हें ?

रीतेश : बाबूजीक एतेक बेसी मोन खराब छैन। हम अपना हाथ सँ कतेक चिट्ठी लिखलहुँ जे पाइ पठा देथिन। बाबूजी पाइक खातिर डाक्टर लग नहि जाइ छथि। पाइ तऽ नहिये पठेलथि, एकोटा चिट्ठीक जवाब तक नहि देलथि।

शोभन : ओना बजबाक तऽ नहि चाही, मुदा आब चुप्पे रहि कऽ की होयत। मंत्रेश्वर भैया जाहि छोट भाईक लेल की नहि केलथि। अपन जीवनक परवाह नहि करैत, अपना स्त्रीक सौख मनोरथ कें डाहैत, ओकरा योग्य बनेलथि। से भाइ सबटा बिसरि घरवालीक संग ऐश मौज कऽ रहल अछि, ठीके कहैत अछि लोक, कियो ककरो नहि एहि संसार मे। मतलब निकललाक बाद सबटा बिसरि जाइत अछि लोक। स्वार्थक खातिर अपन दायित्व आ कर्त्तव्यक तिलांजलि चढ़बैत अछि आजुक लोक।

(मंत्रेश्वर उकासी करैत उठऽ लगैत छथि। सुशीला मना करैत छनि। तैयो उठि जाइत छथि।)

मंत्रेश्वर : उठऽ दिअ। शोभन, आइ ठीके बड़ भीतर सँ तकलीफ भेल हें। एना हमरा भीतर पहिल बेर भेल हें शोभन। हम एतेक अफसियाँत ककरा लेल भेलहुँ ? की ओ हमर केलहा सबटा बिसरि गेल होयत ?

शोभन : बिसरि तऽ नहि गेल होयत मुदा, बिसरेबाक प्रयास जरूर जारी रखने हेती ओ कुलउजारिन। हाय रे ईश्वर, नारियोक कतेक रूप बनौने छी। एकटा नारी जकर पैर घर मे पड़ितहि दिन-दुगुना राति-चौगुना भऽ जाइत अछि। जेना लिअ ने भौजियेक, हिनका अबिते घरक उन्नति शुरू भऽ गेल। कोदारिक बल पर दू कट्ठा आहाँ अरजलहुँ। कुलक्ष्मीक पैर पड़िते स्वर्ग सन घर मे एहन जे भुँइडोल आएल नर्क सँ बत्तर बना देलक।

सुशीला : छोड़ै जाउ ई सब बात आब। आखिर कनियाँ अपना घरवाला लग छथि। अपना पति कें सिखबैत बुझबैत छथि। अपन पति पर सबके अधिकार बनैत छैक।

मंत्रेश्वर : आहाँ ओहि नारीक प्रसंशा करैत छी, जे नारी अबिते हमरा घर कें दू भाग मे बाँटि देलक। जे भाई भाउजक सम्बन्ध पर चोट मारलक, मान-सम्मान कें माटि मे मिला देलक। नहि, ओ नारी नहि, जीबैत लहास छी। जाहि लहास सँ इएह घर टा नहि, समुच्चा समाज तापित भऽ रहल अछि।

सुशीला : तऽ आइ आहाँ, समीर बौआक लेल जे केलौं ताहि पर पछता रहल छी।

मंत्रेश्वर : हँ, ठीक बुझलहुँ आहाँ। आइ हमरा पश्चात्ताप भऽ रहल अछि। बहुत पछता रहल छी हम। कारण ओहि भाइक

खातिर हम संबटा बिसरि गेल छलहुँ। ओकरा बादो कोनो सम्बन्ध होइत छैक? ओकरा कारने हम स्त्री कें स्त्री नहि बुझलहुँ। कतेक कष्ट आहाँ के सहए पड़ल। हमरा क्षमा कऽ दिअ सुशीला। *(शोभन दिश तकैत)* हम कहैत छिअ शोभन, जँ हुनकें जेंका हमहूँ अपन स्त्रीक बात मानए लगितहुँ तऽ........।

शोभन : इहो कहक बात। कुकुर-बिलाड़ि जेंका टुघरैत रहितथि।

सुशीला : बेकारक मुँह दुखा रहल छी। सत्य एतबे थीक-जकरा कपार मे जे विधना लिखि पठौने छथि ओतबहि होइत छैक। तहन तऽ भगवान अपना सिर दोष नहि लगबैत छथि।

शोभन : भौजियोक कहब ठीके छनि। कहबी अछि, कपारक लिखलाहा के दैवो ने मिटा सकैत छथि। ओह बाबा, हमहूँ बड़ बिसराह भऽ गेलहुँ, जे कहक लेल एलहुँ से तऽ बिसरिये गेलहुँ।

सुशीला : केस उज्जर भऽ गेल, आबो दिमाग जुआने रहत की ?

शोभन : भौजी, भौजी एना जुनि बाजू। एखनो मोन वैह अछि। एलहुँ जे हठात् गंगासागर जाइक प्लान बनि गेल हें।

मंत्रेश्वर : ई एकाएक कोना कऽ चुप्पे-चाप प्लान बना लेलहक ?

शोभन : भैया, आइ जँ कष्ट काटि छोट भाई के पढ़ेलौं-लिखेलौं तऽ बड़ सुखो दऽ रहल अछि। ओकरा मुम्बई सँ कोलकाता बदली भऽ गेलैक। सैह चिट्ठी लिखलक जे भौजियो कें संग लय चलि आउ।

(चिट्ठी जेबी सँ निकालि लैत छथि। रीतेश पटिया पर बैस पढ़य लगैत अछि।)

लिखलक जे गंगासागर स्नान सेहो भऽ जायत आ संग-संग कोलकाता शहर घूमि लेब। यौ भैया, हम तऽ भगवान सँ कहैत छियैन जे छोट भाइ ककरो दियौक तऽ हमरे भाइ सन। जतेक टाका दरमाहा उठबैत अछि, खोराकी घरभाड़ा राखि बाँकी सबटा कनियों नामे नहि, आहाँक भाबहु नामे पठा दैत अछि। चिट्ठी मे लिखि दैत अछि किछु पाइ कनियाँ कें सेहो दऽ देबैन। हमर भाई, भाई नहि बेटा छी, बेटा।

मंत्रेश्वर : एकटा हमरो भगवान छोट भाई देलथि। सब सपना पूरा कऽ देलक। तृप्त भऽ गेलहुँ हुनकर सुख सँ।

शोभन : कने हमरा कोलकाता जाइ तऽ दिअ। तहन ने हम समीर बाबू कें माथा खोलब। जेना लगैत अछि कामरु-कमख्याक जंतर-मंतर चला देलक हें ओकरा ऊपर। हँ तऽ सैह एकटा तरकीबक बात कहैक लेल एलौं। एतए तऽ आहाँ सब तंगी हालत मे छीहे, रीतेशक जिनगी सेहो अन्धकार दिश चलि जा रहल अछि। रीतेश बड़ चंचल आ पढ़ै लिखै मे तेज अछि। हमर विचार अछि रीतेश कें कोलकाता अपनहि संगे नेने जइतियैक। कने पढ़ि लिखि लेत तऽ अहूँ सबहक दु:खक अन्त भऽ जायत।

सुशीला : नहि-नहि। रीतेश बौआ लग नहि जायत। भनहि एतहि अछि। ओकरे देखि-देखि तऽ जीवि रहल छी।

शोभन : एहि तरहक जिद्द .....। भौजी, हमहूँ जनैत छी रीतेशक चंचलता बन्हने अछि। मुदा भौजी, रीतेशक आगा आ बऽ बला पहाड़ सनक जिनगीक बारे मे कखनहुँ आत्ममंथन करैत छी। जँ ओकर पढ़ाइ-लिखाइ उचित ढंगे नहि कराओल जायत तऽ ओकर हालत तऽ अहूँ सब सँ बदतर भऽ जायत।

मंत्रेश्वर : ठीके कहैत अछि शोभन। गाम घरक धीया-पूताक हालत बड़ खराब अछि। एहिठामक शिक्षा मे आब कोनो दम नहि रहि गेल छैक। शहरक पढ़ाई करत तखनहि टा नोकरी-चाकरी पाबि सकत। *(बजिते, बजिते मंत्रेश्वर कें उकासी उठि जाइत छन्हि। शोभन आ सुशीला पकड़ैत छनि। रीतेश सेहो लगीच आबि जाइत अछि।)* कहि दिहक शोभन, जँ भाइक मुँह देखबाक होइक तऽ गाम आबक लेल। आब हम बेसी दिन नहि जीव। रीतेश कें संगहि नेने जाहक।

रीतेश : नहि बाबूजी, हम नहि जायब। ककाजी आ काकी आहाँ सबहक अपमान केलथि हें। बाबूजी हम गामे मे खूब मोन लगा कऽ पढ़ब। हम नहि जायब हुनका सब लग।

मंत्रेश्वर : जिद्द जुनि करू। पढ़ि-लिखि लेब तखनहि टा किछु कऽ सकैत छी। बिना शिक्षाक मनुष्य महीष बराबर होइत अछि। हमर हालत तऽ देखिते छी। कखन मरब से नहि कहि। नहि मरिते छी आ नहि जीवते छी। बिच-बिचौआ मे प्राण टांगल अछि।

रीतेश : *(सुशीला लग जाकऽ कनैत)* माँ हम नहि जायब आहाँ सबकें छोड़िकऽ।

(तखनहि मंत्रेश्वर कें फेर उकासी उठैत अछि। सब मिलि सम्हारऽ लगैत छथि। आस्ते- आस्ते मंच अन्हार होइछ।)

*****

अंक : द्वितीय : : दृश्य : दोसर

(स्थान : समीरक शहरी फ्लाट। शिखा कुर्सी पर बैसि अखबार पढ़ऽ मे लीन अछि। किछु क्षणक बाद दोसर कोठली दिश सँ ऑफिस जाइक वेश-भूषा मे समीरक प्रवेश होइत अछि। एकटा छोट अटैची, कान्ह पर कोट। अबिते अटैची टेबुल पर रखैत छथि। फेर कोट पहिरैत टाइ ठीक करैत छथि।)

समीर : महारानी जी, महारानी जी! एहि घर मे अखबार पढ़बाक अतिरिक्तो कोनो कार्य अछि कि नहि ? नौ बाजि चुकल, आइ फेर ऑफिसक देरी भेल।

शिखा : आहाँ तऽ ओना ने बाजि रहल छी जेना लगैत अछि हम अपन आँचर सँ आहाँ कें बान्हि कऽ रखने होइ। *(मुँह अँइठैत)* ऑफिस देरी भेल, हुँः ....।

समीर : काजक समय मे काज केनाइये शोभा दैत छैक।

शिखा : घर मे काज करैक लेल आदमी राखल अछि। तकरा उपरान्तो आहाँ कें हमरे सँ कार्य करबैक मोन होइत रहैत अछि।

समीर : आदमी राखल अछि, आदमी राखल अछि, सुनैत-सुनैत तबाह भऽ गेल छी। एक कप चाह तक पर आफद भेल रहैत अछि।

शिखा : *(उच्च स्वर)* रामलाल! रामलाल!

रामलाल : (नेपथ्य सँ) आबि रहल छी दीदी! *(एकटा ट्रे मे दू कप चाह, दू ग्लास जल आ बिस्कुटक संग रामलाल प्रवेश करैत अछि।)*

रामलाल : *(सुकपाक करैत)* दीदी, गैस समाप्त भऽ गेल। स्टोब जड़बऽ पड़ल तैं कनेक देरी भेल।

समीर : ठीक अछि, कोनो बात नहि। देरी भेल तऽ भेल, हमरा दुरुस्त चाही। आइ हमर लंच जुनि आनब। एकटा आवश्यक मिटिंग मे जेबाक अछि, हम ऑफिस मे नहि रहब।

(रामलालकप्रस्थान। शिखा आ समीर चिन्ता-भावना सँ चाह पीबैत।)

शिखा : सब खन एना उदास आ विचलित मुद्रा मे किएक रहैत छी। दू-चारि दिन सँ किछु बेसिये परेशान सन बुझना जा रहल छी।

समीर : ने कोनो चिट्ठी आ ने कोनो समाद। गाम परहक किछु खबरि नहि पाबि रहल छी। एतेक पत्र हम लिखलहुँ, एकोटा पत्रक जवाब नहि आएल। कम सँ कम पाइ पहुँचैत छन्हि की नहि से तऽ खबरि करितथि। जानि नहि कोना की छथि भैया-भौजी सब।

शिखा : फेर भैया-भौजी। भिनसर-साँझ खाली एतबहि जपैत रहैत छी। भैया-भौजी, भैया-भौजी। आब हम तंग आबि गेल छी सुनैत-सुनैत। हुनका दुनू गोटाक आगाँ मे आहाँक कियो अपन अछिये नहि। गोटेक दिन आहाँक ओहि भैया-भौजीक खातिर हम जहर-माहुर खाकऽ मरि जायब।

(समीरक तामस आकाश छुबैत अछि। हाथक कप डीस संवादक अन्तिम क्षण मे पटकि दैत अछि।)

समीर : शिखा! बन्न करू गेलहा गीत। सुनैत-सुनैत तऽ हम तबाह भऽ गेल छी। ककरा पर एतेक सेखी झाड़ि रहल छी आहाँ, हमरा ऊपर की हमरा भाई-भाउजक ऊपर ? की बिगाड़लैथ आहाँ कें ओ सब। एक बेर जँ भैया-भौजीक चर्च करू की लुहास जेंकाँ लह-लह कन-कन करए लगैत छी। तंग भऽ गेलौं हम आब। आहाँक कारणे आब हम पागल भऽ जायब। की करब, किछु नहि फुरा रहल अछि। *(किछु सोच मे पड़ि जाइत अछि।)*

शोभन : *(तखने नेपथ्य सँ) समीर! समीर बाबू ! समीर गेटक लऽग जाइत अछि जे खुजल अछि। देखि, 'एक मिनट रुकू।' कहि भीतर आबि*

शिखा सँ – आहाँ भीतर चलि जाउ शोभन भैया एलथिहें। शिखा आँखि लाल पीयर कऽ भीतर दिश प्रस्थान करैत अछि। शोभन आ रीतेशक प्रवेश होइत अछि। समीर शोभनक आ रीतेश समीरक पैर छुबैत अछि। समीर रीतेश कें पाँज मे उठबैत अछि।)

समीर : भैया, गाम परहक की हाल-चाल अछि। हमर भैया-भौजी कोना छथि ?

शोभन : *(कनेक समयक चुप्पी तोड़ैत)* गाम परहक हाल-चाल की पुछैत छऽ। गाम परहक बात मुँह सँ कहनाइ कम थीक। एकबेर जँ स्वयं देखि अबितऽ तऽ नीक रहितऽ। जे भाई तोरा लेल की नहि केलक ओ आइ मृत्यु शय्या पर पड़ल अछि। तों ओकरा सबके बिसरि शहर ओगरने छऽ। किएक नहि ओगरबऽ। कोनो वस्तुक कमी जे नहि छऽ। तों ई बात जनै छऽ जे हमर भाई मात्र दवाइ पर ठाढ़ अछि। दवाइ बन्न तऽ ओकर जीवनक इजोत मिझा जायत से दवाइ ओकरा दू मास सँ छूटल छैक। हम कहैत छिअ जँ ओ पाइक कारणे मरि जायत तऽ तोहर पाइ लऽ कऽ हेबे की करतैक। तोरा भाई सँ पैघ पाइ बुझना जाइ छऽ। एतेक चिट्ठी ओ लिखलथुन हम लिखलिअ। ई छोट नेना अपना हाथ सँ कतेक चिट्ठी लिखलक। तोरा एकटाक जबाब नहि देल भेलऽ। किएक देबहक! ओ सब तोहर लगिते के छऽ। फेर शहरक लोक कें तऽ समयो कम रहैत छैक।

समीर : शोभन भैया, ई सब की हमरा सुना रहल छी!

शोभन : आब पेट मे राखिये कऽ की भेटत। कहबी अछि अपन वियाह भेल गामक शुद्ध शेष भेल । आब ओकरा सँ तोरा काजे कोन छऽ। कोन जोकरक आब ओ रहि गेल। मुदा ई बात सब ठीक नहि समीर। एहसानक बदला चुकाबी। ककरो ऋणी बनि औज-मौज नहि करी। तों ऋणी छऽ

ओहि भाई-भाउजक। ओकरा ऋण सँ कहियो उऋण नहि भऽ सकबऽ। एकटा बात बुझि राखऽ– ओकरा भाग्य मे जे हेबाक हेतैक, सैह हेतैक, तों बेकारक कर्तव्य सँ विमुख भऽ ओकर एहि स्थितिक जिम्मेदार बनैत छऽ।

समीर : बस करू शोभन भैया, बस करू! आब बस करू। हमर कान एहि सँ बेसी नहि सुनि सकैत अछि। आखिर आहाँ कहए की चाहैत छी। आहाँक एकोटा बात हमरा समझ सँ सत्य नहि अछि। जहिया सँ हम शहर एलहुँ एकटा चिट्ठी-पत्री हुनकर सबहक हम नहि पबैत छी। उन्टे चिट्ठी आ पाइ प्रत्येक महीना समय सँ पठा दैत छियनि। तकर बादो हमरे ऊपर दोषारोपण कएल जा रहल अछि।

शोभन : *(आश्चर्य)* चिट्ठी......पाइ......सेहो प्रत्येक महीना। ई सब तोरा मुँह सँ सबटा मिथ्या बात निकलि रहल छऽ। ठीक दोसर बरख शहर एना तोहर बीत रहल छऽ, जँ तोरा हाथक फुटल कौरी ओ पबितथि तैयो तोरा सब सँ प्रसन्न रहितथि। एतेक बड़का झूठ। नहि एकटा चिट्ठी आ नहि एकटा पाइ। एतेक बड़का झूठ किएक बाजि रहल छऽ।

समीर : मुदा..... ई सब एना किएक भेल। हमर सब रास्ता बन्न भऽ गेल। आब हम जिनगी सँ हारि मानि गेलौं। पागल भऽ जायब हम। आब साहसक बाहरक बात भऽ गेल।

(समीर कानऽ लगैत अछि। शोभन आबि थपथपा कऽ सम्हारैत अछि।)

शोभन : एहना स्थिति मे एतेक विचलित होइक आवश्यकता नहि। जे मनुष्य परिस्थितिक सामना डटि कऽ केनाइ नहि सिखलक ओ जीवन मे सिखबे की केलक। समीर, एखनहुँ किछु नहि बीतलै। एखनहुँ समय अछि। अपन दायित्वक अधीन आबि जाउ। एहि नेना कैं हम जिद् कऽ

कऽ नेने एलौं। ओहि ठाम एकरो भाग्यरेखा मिटाइत देखलियैक।

समीर : ठीक, ठीक केलहुँ भैया। एकरा एतहि नीक स्कूल मे नाम लिखा दैत छियैक।

शोभन : हम अजुका चारि बजेक गाड़ी सँ गाम चलि जायब। जँ किछु देबाक होअ.........तऽ। ओकरा सबहक हालत बड़ असमंजस मे..........।

समीर : हँ-हँ, पाइ दैत छी नेने जइयौक। कहि देबैन, ओ आहाँ सबके नहि बिसरलहें। हम बेबस भऽ गेल छी। हम अपना बस मे नहि छी। सब समय जहरे-माहुरक सामना करए पड़ैत अछि।

शोभन : एतऽ पैर जखनहि रखलौं सबटा बुझऽ मे आबि गेल। हम कहैत छलियैन आ आश्चर्यो लगैत छल जे ओहेन आज्ञाकारी भाई कोना एहन पाथर भऽ जायत। हँ समीर, कने हम लघुशंका जायब।

समीर : ओ......हँ, बुझलौं। *(इशारा दैत)* हे ओहि घर मे चलि जाउ। केबार लगा देबैक।

(शोभन बाथरूम दिश बढ़ैत अछि।)

समीर : *(आवाज दैत)* शिखा! शिखा छी ?........ऐ शिखा।

(शिखाक प्रवेश होइत अछि। रीतेश गोर लगैत छनि। रीतेश के देखि आँखि लाल करैत मुँह घुमबैत अछि।)

शिखा : की बात छी...........?

समीर : पाँच हजार टाका जल्दी सँ नेने आउ।

शिखा : पाँच हजार टाका! एखन की होयत पाँच हजार टाका ?

समीर : हमरा लग एखन समय कम अछि आ कार्य बेसी। हम कहलौं पाँच हजार टाका नेने अबैक लेल। *(आवाज दैत)*

रामलाल……

(शिखा आँखि फेरैत प्रस्थान करैत अछि। रामलाल प्रवेश करैत अछि।)

रामलाल : हमरा बजेलहुँ मिसरजी ?

समीर : आहाँ सबके तऽ किछु कालक बाद बजायब! एखन……।

रामलाल : एतेक गरमाएल किएक छी मिसर जी ?

समीर : एहि बच्चा केंलऽ जाउ भीतर, तैयार कऽ हमरा आफिस नेने एबैक। पहिने एक कप चाय बना नेने आउ।

(रीतेश अपन झोड़ा रामलाल कें थमबैत अछि। रामलाल रीतेश कें लऽकऽ प्रस्थान करैत अछि। शिखा पाँच हजार टाका लऽ कऽ प्रवेश करैत अछि। समीर कें थमबैत तमसाएल भीतर चलि जाइत अछि। शोभन बाथरूम सँ ढेका ठीक करैत सोझा अबैत छथि)

शोभन : हँ बच्चा, ओ की कहैत छैक पैनक टंका से बहिते अछि। खोलि तऽ देलियैक मुदा बन्न नहि कएल भेल।

समीर : कोनो बात नहि, आहाँ बैसू , बन्न कऽ देतैक।

शोभन : *(बैसैत)* हँ शहरक बात की हम सब बुझैत छियैक। एहिना हमरो भाईक डेरा मे सबटा छैक। हमर भातिज ओकरा कहैत छैक बाइथ रूम, कैचीन रूम तऽ लेटीन रूम ई अंगरेजिया भाषा सब की बुझैत छी हमरा गमैया लोक।

(रामलालक प्रवेश होइत अछि। ओकरा हाथ मे चाहक ट्रे जाहि मे विस्कुट आ जलक ग्लास सेहो अछि। शोभन किछु विस्कुट आ चाहक कप उठबैत छथि।)

शोभन : तो चाह ……।

समीर : हम एखनहि पीलौं हें *(रामलाल सँ)* सुनू बाथ रूम मे पानि खुजल अछि, बन्न कऽ देबैक *(रामलालक प्रस्थान)* भैया आहाँ चाय पीबू ने ठंडा होइत अछि। हम तऽ भरि दिन ऑफिस मे चाह कैक बेर पीब। ओनहियो चाह हम कम पीबैत छी।

शोभन : से तऽ ठीक करैत छी जे चाह कम पीबैत छी। एखन गाम मे तऽ चाहक बड़ चलन अछि। एक साँझ सहि बरू जायत मगर चाहक जोगार भेनाइयेटा छैक। *(चाय खतम करैत)* तऽ आब जुनि रोकऽ, हम चलैत छी।

समीर : एखनहि किएक जायब। खा-पी कऽ आराम करू। एतहि सँ स्टेशन चलि जायब। सुधीर भाई कें फोन सँ कहि दैत छियन्हि।

शोभन : नहि-नहि, जिद्द जुनि करऽ।

समीर : एकर मतलब भेल एखन तक हमरा पर तमसाएले छी।

शोभन : समीर, ई की बाजि रहल छऽ। लक्ष्मण सन भाइ पर तामस उठत।

समीर : *(पाइ दैत)* पाँच हजार अछि। कहि देबनि जतेक टाकाक जरूरी होनि, चिट्ठी लिखैक लेल। *(कार्ड जेबी सँ निकालि कऽ दैत।)* ई लिअ एहि मे हमर ऑफिसक पता अछि एवं फोन नम्बर। डेराक पता पर चिट्ठी नहि दैक लेल कहबनि। शोभन भैया, ओ जतेक हमरा लेल केलथि ओतेक तऽ ठीके नहि हमरा सँ कएल होयत। मुदा कर्तव्य सँ विमुख होइक जहाँ तक बात छैक से हम नहि होयब। शोणितोक रंग कहियो बदललहें।

शोभन : तहन आब चलैत छी। हँ, बच्चा कें कने ठीक जेकाँ रखिहक।

समीर : रीतेशक कोनो तरहक चिन्ता नहि करक लेल कहबनि।

(शोभनक प्रस्थान होइत अछि। समीर किछु क्षण टहलैत छथि। फेर उच्चस्वर मे – रामलाल।)

रामलाल : हमरा बजेलहुँ मिसरजी। हम तऽ बच्चा के तैयार करैत छलौं।

समीर : शिखा कें बजा आनू ।

(रामलालक भीतर दिश कऽ प्रस्थान। किछु क्षणक बाद रामलालक संग शिखाक प्रवेश।)

समीर : रामलालबाबू एतेक दिन तक हम आहाँ कें अपना घरक सदस्य बुझैत छलौं नौकर नहि। परंच रामलाल बाबू आहाँ तऽ नौकरी सँ नीचा खसि पड़लौं। की विश्वास करक फल इएह सब देलौं।

रामलाल : मिसरजी! एहन कोन अपराध हमरा सँ भऽ गेल।

समीर : एखनहुँ पूछि रहल छी अपन अपराधक बारे मे। हम आहाँ ऊपर विश्वास केलौं प्रथम तऽ एहि दुआरे जे आहाँ हमर जाइत-पाइनक छी। दोसर आहाँ हमर सासुरक लोक छी। तेसर सारक इलाका मे लगैत छी। सबटा स्वयं समाप्त कऽ लेलौं।

रामलाल : आखिर एहन की गलती भऽ गेल हमरा सँ ?

समीर : आहाँ ई किएक नहि पुछैत छी–की बाँकी रहल आब ?

रामलाल : तऽ फेर साफ-साफ कहू ने।

समीर : साफ-साफ तऽ आब हमर प्रश्नक जबाब आहाँ दिअ। जँ सटीक जबाब हम नहि पेलौं तऽ फेर हमरा सन खराब केयो नहि भेटल हएत, नहि भेटत। पुलिसक डंडाक डर होइत हो तऽ.......... ।

रामलाल : नहि-नहि, मिसरजी ....पुलिस अनबाक नहि कोनो काज। हम सबटा सत्य-सत्य बाजब।

(रामलाल आ शिखाक नजरि मिलैत अछि। एकत्र समयानुसार अभिनय निकलैत अछि।)

समीर : गाम पठबैक लेल जे चिट्ठी एवं टाका सब दैत छलौं से आहाँ गाम पठबैत छलौं ?

(रामलाल अस्तव्यस्त, डेराइत शिखा दिश तकैत अछि।)

समीर : हम पुछलौं गामक लेल जे चिट्ठी पाइ दैत छलौं से पोस्ट करैत छलौं की नहि ? *(रामलाल चुप रहैत अछि,)*

शिखा : एना जान लेबए पर किएक उतरि गेल छी। पठा तऽ दैत छल।

समीर : प्रश्न आहाँ सँ नहि कएल गेल हें। तें उत्तर जँ अबैत अछि तऽ मुँह सीब लिअ, कारण अपन प्रश्नक उत्तर आहाँ लग नहि होयत। हँ, रामलाल जी, सबाल अहीं सँ केने छलौं। चुप किएक छी, हमरा जबाब जल्दी चाही।

(रामलाल चुप अछि, समीर आँखि लाल करैत ओकर गड़दनि पकड़ैत)

चलू थाना। आइ कोनो अपनापन नहि। लातक भूत बातक आदी नहि होइत अछि।

(हल्ला सुनि रीतेशक प्रवेश होइत अछि। शिखा स्थिति देखि बचाव पक्षक संवादक प्रयोग करैत अछि।)

रामलाल : रुकू मिसरजी ! थाना नहि जाइक काज। हम सबटा कहैत छी। पहिने हमर कण्ठ छोड़ि दिअ। कंठ दबाएल अछि हमर। मरि जायब हम एना मे। गड़दनि दबा गेल।

(नमहर साँस छोड़ैत समीर कालर छोड़ैत अछि)

समीर : *(उच्चस्वरें)* जल्दी बाजू....... जल्दी .... हम कहैत छी, जल्दी बाजू।

रामलाल : *(हकमैत)* मिसर जी, जतेक पाइ आ चिट्ठी पठबैक लेल आहाँ दैत छलौं सबटा ...... सबटा दीदी लऽ लैत छलथि। चिट्ठी फारि पैखाना मे जा फेकि दैत छली आ पाइ अपन पर्स मे रखैत छली। हमर मुँह चुप रखैक लेल हमरो किछु पाइ ओहि मे सँ दैत छली। हमर कोनो कसूर नहि अछि मिसरजी, हमर...........

(समीर आश्चर्य सँ शिखा दिश तकैत अछि। शिखा मुरी घुमा लैत अछि।)

समीर : *(रामलाल सँ)* एतए सँ जल्दी चलि जाउ। हमरा आँखिक सोझाँ सँ जल्दी जाउ। मेक हेस्ट, गो फ्राम हेयर। एहिघर मे आहाँ सन नीच लोकक लेल कोनो जगह नहि अछि जे दोसरक थारीक रोटी छिनैवलाक संग दैत हो।

रामलाल : मिसरजी एहन गलती आब कहियो नहि करब। हम गरीब आदमी छी। हमरा क्षमा कऽ दिअ।

समीर : ओहि सँ पहिले कि एतए पुलिस आबि जाय, हम नीक मोन सँ कहैत छी एतए सँ चलि जाउ। आहाँ हमरा मोन सँ खसि चुकल छी।

(रामलाल उदास सिसकैत बाहरक लेल प्रस्थान करैत अछि, समीर शिखा दिश घुमैत अछि। दुनूक आँखि एक दोसर सँ मिलैत अछि।)

समीर : शिखा! आहाँ एतेक नीच काज करै पर उतरि जायब, ई बात हम सपनहुँ मे नहि सोचैत छलौं, दिन पर दिन आहाँ मे भऽ रहल ई परिवर्तन नारीजातिक नाम पर करिखाक रूप धारण केने चलि जा रहल अछि। एतेक सुख-सुबिधा पेलाक उपरान्तो मात्र एक हजार टाका भैया-भौजीक लेल पठबैत छलौं सेहो राखि लैत छलौं। आहाँ के पाइक जरूरी होइत छल तऽ हमरा सँ माँगि लितहुँ। पाइक कतेक जरूरी हैत से तऽ हम बुझैत छी। आइ हेट यू। आइ हेट यू शिखा। आइ हेट यू। *(एकटा हाथ सँ टेबुल पर सँ अटैची आ दोसर हाथ सँ रीतेशक हाथ पकरि बाहरक लेल झटकल डेग मे प्रस्थान करैत अछि। शिखा किछु विचलित भऽ टेबुल पर माथ अटका लैत अछि। आस्ते-आस्ते मंच अन्हार।)*

— : : —

अंक : द्वितीय :: दृश्य : तेसर

(सेट क्रमशः चलि रहल अछि। रीतेश स्कूलक वेश-भूषा मे अछि। ओ एकटा छोट बाल्टी मे जल एवं कपड़ाक टुकड़ा भिजा-भिजाकऽ फर्स पोछि रहल अछि। आधा पोछलाक बाद कने थाकि सन गेल हें। फेर पोछऽ लगैत अछि। तखनहि ऑफिस सँ घूरि आबक मुद्रा मे बाहर दिश सँ समीरक प्रवेश। देखि चौकैत अछि। फेर घड़ी पर आँखि दैत अछि। बड़ आश्चर्य लगैत छैक।)

समीर : रीतेश! ई की आहाँ कऽ रहल छी? ई काज के कहलक आहाँ कें करैक लेल। आहाँ एखन तक स्कूल नहि गेलौं? *(रीतेश काकाजी कहैत लग मे आबि। जोर-जोर सँ कानऽ लगैत अछि।)*

समीर : सब सँ पहिने कननाइ बन्न करू। बन्न करू कननाइ। बस बहुत कनलौं आब मुँह बन्न करू। *(चुप होइत अछि)* हँ ई भेलै ने। चलू आब सब सँ पहिने कहू स्कूल किएक नहि गेलौं?

रीतेश : काकाजी, हमरा काकी स्कूल नहि जाए देलथि। हमरा सँ ओ बड़ काज करबैत छथि ककाजी। हमरा की कहलथि, बुझैत छी।

समीर : की कहलथि?

रीतेश : हमरा कहलथि तोरा पढ़ लिखबैक लेल थोरबे अनलखुन्ह हें। हमरा तऽ नोकरक काज छल तें रहए देलियौक। हम गाम जायब ककाजी। हम माँ लग जायब। हमरा माँ बहुत मोन पड़ैत अछि। *(रीतेश कानऽ लगैत अछि।)*

समीर : आहाँ कानू नहि। आहाँ गामे जायब ने।

रीतेश : हँ!

समीर : ठीक अछि, आहाँ गाम चलि जायब। ओतहि मोन लगा कऽ पढब। सब खर्चा हम ओतहि पठा देब। चलू आब चुप भऽ जाउ।

रीतेश : ककाजी, काकी हमरा संग एना किएक करै छथि। ओ हमरा की कहलथि पता अछि आहाँ कें ? (की) कहलथि तों हमरा घरक नौकर छियैं। *(कानऽ लगैत अछि)* हम नौकरक काज नहि करब काकाजी। हम पढ़ब-लिखब, कुर्सी पर बैसए वला आफिसक काज करब।

समीर : हँ-हँ, आहाँ निश्चित पैघ आफिसर बनब। आब हमर बात मानू, जल्दी मे अपन स्कूल ड्रेस बदलि दोसर कपड़ा पहिरने आउ। तहन दुनू गोटे संगे खायब।

रीतेश : नहि काका जी। आब हम आहाँक संगे कहियो नहि खायब।

समीर : किएक, हमरा सँ तमसाएल छी की ?

रीतेश : नहि, नहि काकाजी, हम तमसाएल नहि छी। जहन आहाँ चलि जाइत छी, तहन काकी बड़ तमसाइत छथि। कहैत छथि आहाँ संगे जे खाइत छी सबटा हमही खा लैत छी। आहाँ कें नहि खाए दैत छी।

समीर : हम नहि रहैत छी तखन कहैत छथि ने। हमरा लग थोरबे कहती। आब तऽ हम सबटा बुझि गेलियैक। आब डराइक बात नहि।

रीतेश : ककाजी आहाँक तऽ हम सबटा बात मानैत छी। अहूँ हमर एकटा बात मानू ने।

समीर : कोन बात, बाजू, जरूर मानब।

रीतेश : हमरा गाम कऽ दऽ आयब ने ? हमरा गामे मे पढ़ैक खर्चा पठा देब। ओतहि हम खूब मोन लगा कऽ पढ़ब।

समीर : हँ-हँ, निश्चित आब गाम आहाँ जायब। आहाँक बात तऽ हम बहुत पहिने मानि चुकल छी। आब जल्दी जाउ कपड़ा बदलि फ्रेस भऽ कऽ आउ।

(रीतेश प्रसन्न मुद्रा मे 'जाइत छी' कहैत प्रस्थान करैत अछि। समीर थोरेक गहींर सोच मे पड़ि जाइत अछि।)

समीर : की करू! शिखाक अत्याचार दिन-दिन बढ़िते चलि जा रहल अछि। ओ अपन जीबैक तौर-तरीकाक संग कोनो तरहक संशोधनक लेल तैयार नहि अछि।

(शिखाक प्रवेश। जेना लगैत अछि तुरंत नहेलाक बाद आएल हें। माथ भिजल, केश खुजल अछि। हाथ मे ककबा, समीर कें देखि थोरे हतप्रभ होइत अछि। फेर एकटा बनाबटी खुशीक फुहार छोड़ैत अछि।)

शिखा : आहाँ एखन घर मे। आफिस सँ घुरि कऽ किएक चलि एलौं।

समीर : ऑफिस सँ हम घुरि कऽ किएक चलि एलौं। आहाँक अत्याचार सँ अवगत होइक वास्ते हम आफिस नहि गेलौं। हम बुझि सकैत छी रीतेश स्कूल किएक नहि गेल। *(चुप रहैत अछि।)* हम पुछलौं रीतेश स्कूल किएक नहि गेल! *(चुप रहैत अछि।)* जबाब हमरा किएक नहि भेटि रहल अछि! रीतेश स्कूल कियैक नहि गेल!

शिखा : आइ ओकरा तैयार करए मे देरी भऽ गेल। समय बेसी भऽ चुकल छलैक। तें आइ ओ स्कूल नहि गेल।

समीर : झूठ, एकदम मिथ्या बात थीक। सरासर सबटा आहाँ झूठ बाजि रहल छी। सत्य तऽ ई छी जे रीतेश स्कूल चलि जायत तऽ घरक काज के करत। के धोत बासन। घर मे पोछा के देत। कपड़ा कोना खिचाएत। शिखाजी, आब अहीं कहू हम झूठ बाजि रहल छी कि आहाँ ?

शिखा : की ई सत्य नहि छी जे एहि घर मे सब खेनहार अछि काज केनिहार कियो नहि। एतेक असगर हमरा बुते पार नहि लगैत अछि। एकटा रामलाल छल तकरो आहाँ भगा देलियैक। कतेक काज ओ बेचारा करैत छल।

समीर : रामलाल नौकर छल। रीतेश नहि। रीतेश पढ़य लेल आएल हें। शिखाजी, एहि घर मे गनल-गुथल तीनटा लोक अछि। तीने आदमी सँ आहाँ अकच्छ छी। आहाँ गाम सँ कैंछी काटि शहर एलहुँ। *(आँखि सँ आँखि मिलबैत)* एकटा बात पुछू शिखा ? जँ रीतेश आहाँक जाउत नहि भऽ आहाँक बेटा रहितए तहन कि एहिना काज ओकरो सँ करबितौं ? एहने बेबहार ओकरो संग रखितौं ?

शिखा : बन्न करू आब अपन भाषण। आहाँक भाषण सुनैत-सुनैत हमर कान पाकि गेल। अपन-आन मे जँ अन्तर नहि रहितैक तऽ फेर सब अपना लेल नहि हरान रहितए। आहाँ जकाँ एतेक भैया-भौजी नहि कियो करैत अछि। एतेक जँ भातिज प्यारा अछि तऽ ओकरा गाम पठा दियौक। एतए जँ रहत तऽ काज करय पड़तैक।

समीर : आहाँक मोनक बात पूरा करक बहुत पहिने निर्णय लऽ चुकल छी, रीतेश कें गाम पठेबाक। आब खुशी छी आहाँ। एखन तक हम ओतबे करैत आबि रहलौं हें जतेक आहाँ कहैत छी। तें आब पराकाष्ठा पर जुनि पहुँचू जाहि सँ हमरा आहाँक बीचक सम्बन्ध सीसा जकाँ चकनाचूर भऽ जाय। *(कने बिलमैत)* शिखा, आहाँ हमरा भूल बुझैत छी। दुनियाँ मे किनशाइते एहन पति होइत अछि जकरा अपना पत्नी सँ प्रेम नहि होइत छैक। फेर तऽ हम प्राण सँ बढ़ि कऽ आहाँ कें मानैत छी।

शिखा : एकटा बात अहूँ बूझक प्रयास करू। कोनो पत्नी लाख बदमाश किएक नहि होइक परन्तु ओ अपना पति सँ ओतबहि प्रेम करैत अछि जतेक एकटा आज्ञाकारी पत्नी। हम आहाँक आज्ञाकारी नहि बनि सकलौं जकर दोषी एक

दोसर के मानैत छी। अहुँ कहियो तऽ नहि सोचलौं जे ई औरत ककरा लेल एतेक कऽ रहल अछि। विश्वास करू मात्र आहाँक लेल.......आहाँक वास्ते....... ।

समीर : बस एतहि अन्तर अछि। आहाँ मात्र हमरा बारे मे सोचैत छी। हम पूरा परिवारक बारे मे सोचैत छी। जाहि बात सँ हम अप्रसन्न रहैत छी तकरा आहाँ नीक कहए लगैत छी। प्लीज शिखा, पतिक सम्मान कोना कऽ कएल जाइत छैक से सीखू। जीबैक तौर-तरीका मे कनिये संशोधन कऽ लिअ। *(करीब जाइत)* शिखा! रीतेशक कोन कसूर अछि। ओ तऽ एकटा अबोध बच्चा छी। जाउ इहो बात हम आहाँक मानि गेलौं। रीतेश कें गाम पठा दैत छियैक। पढ़ैक खर्चा ओतहि पठा देल करबैक। बस प्रसन्न रहू। एतेक हम ककरा लेल करैत छी।

(आमने-सामने अबैत करीब अबैत अछि। शिखा हँसैत समीरक पसारल बाँहि मे समाइत अछि। समीर थपथपबैत-आइ लव यू। आहाँ हँसैत कतेक नीक लगैत छी। नमहर निसास छोड़ैत अछि। मंच धीरे-धीरे अन्हार होइछ।)

****

अंक : तृतीय :: दृश्य : पहिल

(स्थान मंत्रेश्वरबाबूक बैसार घर, खाट पर मंत्रेश्वर बाबू पड़ले छथि। हुनका पैर लग चिन्तित मुद्रा मे सुशीला बैसल अछि। बगल मे शोभन कुर्सी पर बैसल छथि।)

शोभन : भौजी, एहि बातक लेल एतेक चिन्ता नहि करैक अछि। एखन हम जीबैत छी। पाइक कारने भैयाक उपचार नहि रुकत।

सुशीला : डाक्टर आपरेशनक बात कहलक हें।

शोभन : हँ-हँ! डाक्टर कहलक हें अपरेशन करबऽ पड़त तऽ अपरेशन हैत। एकटा चिट्ठी हम समीर कें लिखि दैत छियैक।

मंत्रेश्वर : *(उकासीक संग उठैत)* रुकऽ .... आब एहि सबहक जरूरी नहि छैक। एतेक टाका ओहो कतऽ सँ आनत। असगर कमेनहार एतेक खर्चा। आब हम सब जीवियै कऽ कोन इनार-पोखरि खुनायब। मरि जायब तऽ तरि जायब।

सुशीला : आपरेशन मे कम सँ कम पचीस हजार टाका खर्चाक बात कहलक हें। एतेक टाका .... सेहो एखने।

शोभन : ओह भौजी, आहाँ ऊपर किएक पहाड़ टूटि रहल अछि। हम आहाँ पाइ नहि कमाइत छी तें पचीस हजार टाका बड़ बेसी बुझाइत अछि। आइ-काल्हि नौकरी केनहारक लेल पचीस हजार टाका किछु नहि भेलैक। फेर समीर कें नीक नौकरी छैक। ओकरा हम एकटा चिट्ठी लिखैत छी। देखैत छी भाईक प्रेमी अछि की घरवालीक पिठलग्गू।

(तखनहि श्यामलकान्त हाथ मे रीतेशक झोड़ा लेने रीतेशक संग प्रवेश करैत। रीतेश के देखि सब चौंकैत अछि। रीतेश सबके पैर छुबि प्रणाम करैत अछि। सुशीला रीतेशक हाथ सँ झोड़ा लऽ प्रस्थान करैत अछि। श्यामलकान्त कें शोभन बैसक लेल कहैत छथि।)

श्यामल : हमरा आहाँ सब नहि चिन्हने हैब।

शोभन : पहिल बेर आहाँ कें देखि रहल छी। पंहिलबेर मे आइ तक किकियो ककरो चिन्हलक हें। परिचय भेलाक बादे जान चिन्ह होइत छैक।

श्यामल : हमर नाम भेल श्यामलकान्त। साहबेक ऑफिस मे हम स्टाफ छी, माने फोर्थ ग्रेड मे काज कऽ रहल छी।

रीतेश : यौ श्यामल काका एतऽ कियो साहब-ताहब नहि बुझता। शोभन काका, अपनहि काकाजीक ऑफिस मे इहो काज करैत छथि। इम्हरे हिनको गाम छनि। काकाजी तैं हिनके संगे हमरा पठा देलथि।

मंत्रेश्वर : आखिर आहाँ कें पठा किएक देलथि ?

(श्यामलकान्त धीमी गति सामाचार जकाँ संवादक प्रयोग करैत छथि)

श्यामल : ई बात तऽ हमरा सँ ने पूछू । ओहि नेना सँ की पूछैत छियनि। आहाँ सबके कोनो चिन्ता नहि करैक अछि। साहेब तमसाएल नहि छथि आहाँ सब पर। ओ तऽ अति चिंतित छथि आहाँ सब लेल। मुदा.......

शोभन : मुदा की भेल जे एहि बच्चा कें पठा देलक ?

श्यामल : ओना ई बच्चा अपने आबक लेल कनैत छल। दोसर साहेब एहि बच्चाक उज्ज्वल भविष्यक लेल गामे के अनुकूल बूझैत छथि।

शोभन : बिना कारणे पठाबक की बात ?

श्यामल : पठाबक कारण। ई तऽ आहाँ सबहक पर्सनल बात थीक। फेर ई तऽ घर-घरक कहानी सेहो थीक। एहि बच्चाक खातिर साहेब आ मेम साहेबक बीच डेली झगड़ा-झमेला होइत छल। किएक तऽ एहि बच्चा सँ मैडम बड़ काज करबैत छलखिन से ऐक दिन साहेब देखि लेलथिन,

साहब सँ बर्दाश्त नहि भेलनि। तें गाम पठा देलथि, आ साहेब कहलैथ एहिबातक लेल दुःख नहि करैक लेल।

शोभन : एक मिनिट, एक मिनिट रुकु। अपने की एहि सँ पहिने धीमी गतिक समाचार पढ़ैक नौकरी करैत छलौं।

श्यामल : की बजलौं अपने। अपने हमर उम्र के तऽ देखू साठि सँ बेसी भऽ गेल।

शोभन : *(आश्चर्य)* साठि साल ? साठि साल मे तऽ लोक रिटायर भऽ..... ।

श्यामल : तहन अपने कें उम्र कें बारे मे कोनो जानकारी नहि अछि। उम्र दू तरहक होइत अछि। एकटा प्राकृतिक उम्र जे सकल सूरत सँ मेल खाइत अछि। दोसर कृत्रिम उम्र जे सर्टिफिकेट मे लिखल रहै छैक। ओ उम्र सूरत देखि कऽ नहि कागज देखि कऽ बूझल जाइत छैक। हमरा तऽ एखन दस साल आरो नोकरी बाँकी अछि।

शोभन : तहन तऽ आहाँक संतान आहाँक बदला मे नौकरी करत। ई आदमी बड़ गड़बर बुझना जाइत छथि।

श्यामला : नहि-नहि, आहाँ सब हमरा गड़बर जुनि बूझू । कोनो तरहक संदेह जुनि करू। आदमी हम बड़ सही आ फीटि छी। *(चिट्ठी पाइ दैत)* ई लिअ। चिट्ठी आ एक हजार टाका। आब हमरा आदेश देल जाय। हमरो गाम पर बच्चा सब .... । हम काल्हिये वापिस जाएब से कोनो समाद हो तऽ कहि दिअ। हम साहेब के कहि देबनि।

शोभन : आहाँ जे आँखि सँ देखने जाइ छी से कहि देबनि। भाय के आपरेशन करबऽ पड़तनि.....खर्च करथिन्ह तऽ......... ।

श्यामल : किएक नहि ? हम कहि देबनि। एखन जाए दिअ।

मंत्रेश्वर : आह! ओहिना कोना जाएब। आब स्नान-भोजन कऽ लिअ तहन जाएब।

श्यामल : नहि! धिया-पुता के देखऽ लेल जी टाँगल अछि। फेर तुरंत चलियो जाएब। एकेटा राति हाथ मे अछि। दिन मे कने आराम कए लेब जे.......... ।*(प्रस्थान)*(सुशीलाक प्रवेश)

रीतेश : आहाँ सब एना एकाएक उदास किएक भऽ जाइ गेलौं। हमरा ओतऽ सँ भगेलथि हें नहि हम अपनहि मोन सँ एलौं हें। हमरा माँ बड़ मोन पड़ैत छल। ककाजीक कोनो दोष नहि छनि। मुदा काकी हमरा सँ बड़ काज करबैत छली।

शोभन : आहाँ सँ कोन काज करबैत छली ?

रीतेश : ककाजी असल बात तऽ आहाँ सब बुझबे नहि केलियैक गाम परहक लेल जे पाइ पठबैत छलथि ने ककाजी, से एकटा छलखिन मामाजी से आ काकी मिलि कऽ राखि लैत छलथि। तें ककाजी मामाजी कें भगा देलखिन।

मंत्रेश्वर : भगा देलखिन ?

रीतेश : हँ भगा देलखिन। सूनू ने, ताही दुआरे काकी तमसा कऽ सबटा काज हमरे सँ करबैत छलथि आ स्कूल सेहो नहि दऽ अबैत छलथि।

शोभन : किएक, आहाँ के स्कूल देखल नहि छल ?

रीतेश : सुनू ने पहिने हमर बात ककाजी। शहरक स्कूल मे बच्चा असगरे नहि ने जाइत छैक। असगर जाहि दिन जाइत छैक ओहि दिन गार्जन कें फोन पर शिकायत करैत छैक। गामक स्कूल नहि ने छियैक। ओह आहाँ सब तऽ बिच्चहि मे लेन काटि दैत छियैक। हम कतऽ छलौं से बिसरिये गेलौं।

शोभन : *(स्मरण करैत)* आहाँ एखन छलौं..... हँ काकी बड़ काज करबैत छलथि।

रीतेश : हँ, ठीक मोन पारलौं। से एक दिन ककाजी ई भजियाबक लेल जे हम स्कूल समय सँ जाइत छी की नहि, ऑफिस

सँ घुरि कऽ डेरा आबि गेलथि। ओहि समय हम की करैत छलौं से पता अछि ?

शोभन : की करैत छलौं से कहब तहन ने पता चलत।

रीतेश : हम घर मे पोछा लगबैत छलौं। देखि ककाजी कें आगि फेकि देलकैन। फेर काकी संगे खूब झगड़ा भेल। आब हमर मुँह दुःखा गेल बाद मे कहब। भूख से लागि गेल । माँ जल्दी आब भनसा घर चलू........।

सुशीला : *(आँखि पोछैत)* चलू पहिने नहा लिअ फेर खा लेब। आब हम आहाँ कें कतौ नहि जाय देब।

(सुशीला रीतेश के लऽ कऽ भीतर प्रस्थान करैत अछि।)

मंत्रेश्वर : शोभन, पढ़ तऽ चिट्ठी मे की लीखल छैक। हमर चश्मा नहि भेटि रहल अछि।

शोभन : *(जेबी सँ चश्मा निकालि आँखि मे लगबैत चिट्ठी फारि कऽ पढ़य लगैत छथि)* पूज्यवर भैया आ भौजी कें हृदय सँ चरण स्पर्श। हम सब कुशल पूर्वक छी। आशा नहि पूर्ण विश्वास अछि अहूँ सब कुशल पूर्वक होयब, जाहि लेल भगवती सँ कामना करैत रहैत छी। आगाँ रीतेश कें हठात् गाम पठा रहल छी जाहि सँ आहाँ सबके तकलीफ पहुँचल होयत। मुदा ई निर्णय बाध्य भऽ कऽ लेमऽ पड़ल। एतऽ रीतेशक जिनगी आर अंधर मे लटकैत देखलौं। रीतेशक पढ़ाई मे जे खर्चा होएतैक सबटा हम पठा देल करब। विशेष की लिखू। पत्रोत्तर जल्दी देब। अहींक छोट भाई, समीर।

सुशीला : *(रीतेश संग प्रवेश)* की सब लिखल अछि पत्र मे ?

शोभन : पत्र मे तऽ कोनो खास बात नहि अछि। रीतेशक बारे मे लिखल अछि। परंच पाइक व्यवस्था कोना की करब।

मंत्रेश्वर : आहाँ सब बेकार हमर ऑपरेशनक चिन्ता करै जाइ छी। आब हमर उम्र भेल। सब दिन की जीविते रहब। आब तऽ मरले सँ कल्याण अछि।

शोभन : भैया, एहन बात फेर नहि दोहरायब, ऐं-यौ, पचास सँ पचपन बरख भेल होयत ताहि अवस्था कें आहाँ मरैक अवस्था कहैत छी। बिमारी सँ ग्रसित छी तें लगैत छी अस्सी वरखक बूढ़ सन। एखनहि डाक्टर जेना जेना कहलक तेना-तेना करब बस तीस सालक छौंड़ा लागब। खैर, हम चिट्ठी लिखैत छी समीर के, पाइक वास्ते।

सुशीला : नहि-नहि, बौआ के ओना पाइक लेल जुनि लिखियौन। चिट्ठी मे एना कऽ लिखि दियौन जे पचीस हजार टाका देताह। ओतेक टाकाक जे खेत हेतनि से रीतेशक हिस्सा लिखा लेताह। ओना पाइ लेनाइ उचित नहि।

शोभन : की बात करैत छी भौजी आहाँ। समीर आहाँ सँ खेत लिखायत तहन पाइ देत। नहि एना कहियो समीर नहि कऽ सकै अछि। भौजी, समीर आहाँ सबहक ऋण सँ कहियो मुक्त नहि होयत। ओना अहूँक कहब जरूर लिख देबैक। हमरा पूरा विश्वास अछि समीर अपन कर्तव्यक पालन करत।

(शोभनक संवादक बीचहि मे मंत्रेश्वर लाठीक बले खाट सँ उठि बाहर जाइक प्रयास करिते जोरक ओकासी उठैत अछि। सुशीला दौड़कऽ पकड़ैत अछि। रीतेश आ शोभन सेहो पकड़ैत ओछाएन पर सुतबैत छन्हि।)

रीतेश : बाबू जीक मोन बड़जोर खराब लगै छनि।

सुशीला : हँ बाउ!

शोभन : बौआ, हिनकर जीवन तोरा कका हाथ मे छैन्ह।

रीतेश : से कोना ?

शोभन : ओ रुपैया देथिन्ह तऽ ऑपरेशन हेतन्हि। नहि देथिन्ह तऽ जय सिया राम।

रीतेश : एना किए कहै छी कका। हमर कका एहन नहि छथि जे रुपया नहि देथिन्ह। हम हुनका देखै छलियनि जे बाबूजी लए ओ कतेक चिन्ता मे रहै छलाह।

शोभन : बौआ, टाकाक काज टके सँ हेतै। चिन्ता सँ नहि।

रीतेश : टाका देथिन्ह। सब कियो ओतहि चलू। हमर कका बड़ नीक छथिन्ह।

सुशीला : अपने मोने कोना चलि जाएब ?

रीतेश : हम चिट्ठी लिखिकऽ श्यामल कका हाथे पठा दै छियनि। ओइ मे लिखि देबनि जे आहाँ अपने लग ऑपरेशन करा देबन्हि तऽ सुविधा हएत। से जे आहाँ हैं कही तऽ सब गोटा ओतहि चलि आएब।

सुशीला : नहि नहि एतेक भार हुनका पर नहि बन्हिऔन।

रीतेश : तों नहि चिन्हलहीं माय। काकाजी के मुन बड़ पैघ छैन्ह। हम जाइछी। *(दौड़कऽ भागि जाइत अछि। सब देखिते रहि जाइत अछि।)*

शोभन : हमहुँ चलै छी, एकटा चिट्ठी हमहुँ अपना तरफ सँ लिखि देबै। *(प्रस्थान)*

इंजोत बन्न होइत अछि

****

अंक : तृतीय : : दृश्य : दोसर

(समीरक फ्लाट। समीरकें ऑफिस जेबाक क्रम मे प्रवेश। कोट उतारि टेबुल पर रखैत अछि। टाइ कसैत अछि। तखने श्यामलकान्तक प्रवेश)

समीर : की समाचार श्यामलकान्त बाबू ? रीतेश ठीक सँ पहुँच गेल ?

श्यामल : हँ *(चिन्तित चेहरा किछु कहक मुद्रा मे।)*

समीर : *(श्यामलकान्तक दिश देखैत)* चेहरा उदास अछि। कोनो खराब समाचार की ?

श्यामल : नीक तऽ नहिए *(चिट्ठी निकालिकऽ दैत।)*

समीर : *(फेर हाथक घड़ी दिश देखि। चिट्ठी पढ़ि गम्भीर भऽ)* आहाँ भैया के देखलियनि ?

श्यामल : हँ हुनका देखि कऽ बुझायल जे काल्हिक बदला आइ आपरेशन भऽ जेबाक चाही।

समीर : ठीक कहैत छी श्यामलबाबू । किओ गाम जाएवला अछि ?

श्यामल : पता करक पड़त ओना कियो ने कियो जाइते रहैत छैक।

समीर : आहाँ भैया के समाद पठा दियौन जे सब गोटा अही ठाम चल औताह। जिनगीक किछुओ क्षण हुनका सेवा मे लगाएब तऽ धन्य भऽ जाएब।

श्यामल : जी, हम एखने आदमी खोजि कऽ समाद पठा दै छियैन्ह। *(प्रस्थान)*

शिखा : *(प्रवेश– समीर के देखि आश्चर्य सँ)* एखन धरि ऑफिस नहि गेलौं ?

समीर : *(चिन्तित)* भैयाक बड़ जोड़ मोन खराब छन्हि। ओ जीता की मरता, एहना हालत छन्हि।

शिखा : जरूर फेर कोनो मोहिनी चिट्ठी आएल होयत। सबटा बात हब बुझैत छी।

समीर : की सबटा बात आहाँ बुझैत छी ?

शिखा : ओहि मोहिनी पत्र मे जरूर लिखल होयत पाइ पठबैक लेल। अछि की नहि लिखल कहू ? कहू.....कहू। चुप किएक भऽ गेलौं।

समीर : *(झुंझलाइत)* शिखा! आखिर आहाँक कहैक तात्पर्य की अछि ?

शिखा : हमर कहैक तात्पर्य ? हमर तात्पर्य अछि, ई गामक लोकक टैकटिस छी, एहि टैकटिस मे आहाँ जुनि पड़ू।

समीर : कोन टैकटिस के बात करैत छी आहाँ ?

शिखा : हमर बुद्धु पतिदेव महाराज, गामक लोक कें जखन ककरो सँ बेसियात वा उपरबाइली टाका टनबाक रहैत छैक तऽ एहि ढंगक प्रयोग करैत अछि। सएह प्रयोग आहाँक ज्येष्ठ भाई आहाँक संग केलथि। मुदा हमरा जीबैत हमर बुद्धु पतिदेव कें ठकि फुसिया लेताह से असम्भव अछि। हमरा मूइलाक बादे हमर पतिदेवक सम्पत्ति पर अधिकार जमा सकैत छथि।

समीर : फेर आहाँक नाटक शुरू भऽ गेल।

शिखा : हमर नाटक! नाटक तऽ आहाँक भाई-भाउज गाम मे कऽ रहल छथि। एतेक दूर रहलाक बादो चैन सँ नहि जीवए दऽ रहल छथि। ओ सब तऽ आहाँ कें कंगाल बनबऽ पर लागल छथि।

समीर : शिखा आहाँ बुझैक प्रयास करू। *(चिट्ठी दैत)* देखू चिट्ठी। फेर ई चिट्ठी भैया-भौजी नहि रीतेश लिखने अछि। संगे शोभन भैया के लिखल चिट्ठी सेहो अछि।

शिखा : *(चिट्ठी लैत)* ओकी कम छथि आहाँक भैया-भौजी सँ। हुनका होइत छनि हम बड़ चालाक छी। ओ चालाकी हमरा लग नहि चलतनि। ओ अपना भाई-भाबहु पर जहिना अधिकार जमेने छथि तहिना हमरा सब संग करबऽ चाहैत छथि। ओकर पत्नी टूटल मरल छैक तें मुँह सीने अछि। हमरा लग नहि चलतनि।

(चिट्ठी पढ़ैत – चिरंजीवी समीर शुभ आशीर्वाद। गाम परहक हालत नीक नहि अछि। भैयाक मोन अतिशय खराब छनि। डाक्टर कहलकन्हि जे दर्दक ऑपरेशन जल्दी नहि कराएल जायत तऽ किछुए दिन मे मरि जेताह। आपरेशन मे लगभग पचीस हजार टाका खर्चाक बात कहलक। आहाँक भाउज बड़ चिन्तित छथि। तें हमरा ई पत्र लिखए पड़ि रहल अछि। कोनो ने कोनो जोगार कऽ पच्चीस हजार टाका लऽ आहाँ गाम जल्दी चलि आउ। भौजी कहलथि– ओहि पाइक बराबर जतेक खेत होएत से रीतेशक हिस्सा अपना नामे लिखा लेब। अहींक, शोभन भैया। दोसर चिट्ठी पढ़ैत अछि।)

शिखा : *(हसैत)* बड़ छोट से उनचास हाथक। हमर कपार खाए लए अओताह। आखिर ओलो सँ बेसी कब-कब। बड़ा ओ खेत दैवाली भेलथि। रीतेशक हिस्सा खेत लिखि देताह। श्रीमान् आहाँ कोन तरहें पत्रक जबाब दऽ रहल छीयैक।

समीर : जबाब नहि समाद पठा रहल छियै।

शिखा : एहिलेल एतेक विचलित जुनि होउ। एकटा आर समाद पठा दियौन– हमरा बुते पाइक व्यवस्था नहि भऽ सकत।

समीर : शिखा ! आहाँ बुझैक प्रयास करूने ?

शिखा : बुझैक प्रयास आहाँ करू श्रीमान्। ई सबटा हुनका सबहक चक्रचालि छी। जाहि मे फँसा कऽ आहाँ कें कंगाल बनबऽ

चाहैत छथि। आहाँक भाउज हमरा सँ जड़ैत छथि। हमर नीक हुनका नहि देखल जाइत छनि।

समीर : एहना समय मे एहि तरहक बाजब शोभा नहि दैत अछि शिखा। ओ हमर ज्येष्ठ भाई छथि। हमरा हुनका मे एकहि साँचक शोणित भरल अछि। ओ मृत्युशश्या पर जिनगी आ मृत्युक बीच संघर्ष कऽ रहल छथि। लोक की कहत हमरा, ताहि विषय मे कने सोचू।

शिखा : लोक की कहत ताहि कारणे अपन देह बेचि कऽ जोगार करब तऽ करू।

समीर : आहाँक सहयोग चाही।

शिखा : हमर सहयोग ? तऽ आब की हमर देह बेचिकऽ पाइक जोगार करब।

समीर : *(उच्चस्वर)* शिखा...........।

शिखा : देखू, एहि सब बात मे हमरा जुनि सानू। हम तऽ एहि मामला मे संग नहि दऽ सकैत छी आहाँ कें। ओना कोन तरहक सहयोगक बात करैत छी से हम बूझी।

समीर : शिखा हम किछु गहना बेच कऽ पाइक व्यवस्था करए चाहैत छी।

शिखा : गुड, वेरी गुड माइ स्वीट डीयर हसवेन्ड। (Good ! very good my sweet dear husband.) कतेक उच्च विचार अछि आहाँक। गहना बेचि अपन भैयाक दवाई करायब। की बजलौं आहाँ। गहना, आहाँ गहना बेचब। आहाँ हमर शिंगार कें बेचि अपन भाई-भाउज पर अर्पण करब। आहाँक मुँह ई बात बाजऽ सँ रुकल नहि। लाज नहि भेल ? दोसर बेर फेर सँ ई बात दोहरायब जुनि।

समीर : शिखा जी एहि के अलावा दोसर कोनो टा चारा नहि अछि

हमरा लग। फेर गहना हम कोनो ऐसो-आरामक लेल तऽ नहि बेचि रहल छी। गहना बेचला सँ हमर भाई के नव जीवन भेटि सकैत छन्हि।

शिखा : मुदा एकटा बात कान खोलि कऽ सुनि लिअ– गहना पर सिर्फ हमर अधिकार अछि। हम गहना बेचैक अनुमति नहि दऽ सकैत छी।

समीर : हम कहाँ कहैत छी हमर अधिकार अछि। गहना पर तऽ सदियों सँ नारीक अधिकार रहलैक अछि। तें तऽ अनुमति माँगि रहल छी। गहना हमरा नहि देखल अछि से कोनो बात तऽ नहि।

शिखा : हमरा बौंसक प्रयास जुनि करू। हम एकबेर कहि चुकलौं जे गहना नहि बेचऽ देब तऽ नहि बेचऽ देब।

समीर : शिखा.........। जिनगी सँ पैघ गहना नहि होइत छैक। गहना एखनहि पाइ भऽ जायत तऽ बाजार सँ कीनि आनब। परंच बापतुल्य भाईक शरीर सँ जँ प्राण निकलि जायत तऽ फेर की पैब।

शिखा : बुद्धु पतिदेवजी, हमरा मुँह सँ जे बात निकलि गेल से निकलि गेल। हमरा जिद्दक आगा अपन ज़िद्द जुनि ठानू। हारि जायब आहाँ। हमर ई अन्तिम निर्णय छी, हम गहना नहि बेचऽ देब।

समीर : मुँह बन्न करू। कोन गहना आहाँ नहि बेचऽ देब, जे गहना आहाँक माय-बाप देने छथि सैह ने। ओहि पर एकतरफा आहाँक अधिकार अछि। मुदा जे गहना हमर ओ जेष्ठ भाई देने छथि अपन कोदारिक परिश्रम सँ अर्जन कऽ ताहि पर तऽ हमर अधिकार बनैत अछि। से हम बेचबे करब कारण हमर भाईक जिनगी सँ पैघ हमरा लेल ओ गहना नहि अछि। *(चलि जाइत।)*

शिखा : रामलाल ! रामलाल ! *(रामलालक प्रवेश)* सुनलौं आहाँ हिनकर जिद्द ? हमरा जिद्दक सोझाँ ओ किन्नहुँ जीति नहि सकै छथि। हम देखा देबनि जे शिखा की कऽ सकैत अछि।

रामलाल : एना किए बनल जाइ छी आहाँ ? कनेक शान्त भऽ कऽ सोचियौ ने।

शिखा : हमरा किछु सोचऽ विचारक नहि अछि। आहाँ हमरा जहर कीनि कऽ आनि दिअ।

रामलाल : *(अवाक होइत)* की ! जहर ! नहि-नहि। एहन पाप हमरा नहि कएल हएत।

शिखा : जेल गेल हएत। नहि आनब तऽ एखने जेलक हवा खुआ देब।

रामलाल : *(चिन्तित)*

शिखा : जाइ छी ?

रामलाल : हँ। (स्वत:) नारी हठ सत्यानाशक जड़ि होइछै। हमरा किछु तऽ करहि पड़त। छीहो तऽ आहाँ जहरे खाएवाली मौगी। घरवाला कें नचा कऽ राखि देलियनि। धधाइत नवकी कनियाँ। जनिहऽ हे ऊपरवला। *(प्रस्थान)*

इजोत बन्न होइत अछि

****

अंक : तृतीय :: दृश्य : तेसर

(शिखा आ समीर मे गहनाक पोटरी लऽ विवाद भऽ रहल अछि।)

शिखा : रुकि जाउ। हमरा गहना मे हाथ नहि लगाउ।

समीर : हम विवश छी, एकरा अतिरिक्त हमरा लग दोसर कोनो उपाय नहि अछि।

शिखा : तहन एकर परिणाम भयंकर हएत।

समीर : भैयाक इलाज नहि करायब तऽ तकर परिणाम आर भयंकर हएत।

शिखा : अर्थात् हमरा जीनगी सँ वेसी प्रिय आहाँ कें भैया छथि।

समीर : वेसी आ कम के सवाल नहि छै। नैतिकताक प्रश्न छै।

शिखा : नैतिकता जाय चूल्हि मे। हमर गहना छोड़ू *(गहना छिनैत।)*

समीर : नहि *(झीका तोड़ी मे गहनाक पोटरी खसि पड़ैत छैक। शिखा उनटि कऽ पकड़ि लैत अछि आ कानऽ लगैत अछि। समीर बिना परवाह केने छिनि कऽ जाए लगैत अछि।)*

शिखा : आहाँ छीनि कऽ लऽ जाइ छी। पाछू पछताएब। शिखा के दोहरा कऽ नहि देखि सकब। नवकी कनियाँक धधाइत लहाश देखब। धधाइत लहाश। हम एखने जहर खा कऽ प्राण त्यागि देब। हँ...हँ ज..ह..र *(फफकि कऽ कानऽ लगैत अछि , विक्षिप्त जकाँ चलऽ लगैत अछि, घर दिश जाइत अछि, पुन: हाथ मे एकटा शीशी नेने अबैत अछि।)*

(रीतेशक प्रवेश।)

रीतेश : काकी गोर लगै छी।

(पैर छूबऽ जाइत अछि। शिखा-पाछु होइत)

शिखा : आबि गेलौं हमर कोंढ़ करेज खाए लए।

(रीतेश के ठेलि दैत)

रीतेश : काकी हमर बात सुनू पहिने।

(शिखा शीशी खोलि रहल अछि ।)

रीतेश : *(डेराइत।)* काकी ! ई की खाइ छी ?

शिखा : जहर , आहाँ सबहक बाटक काँट बहार कऽ दैत छी।

रीतेश : नहि काकी, नहि।

(छीनऽ चाहैत अछि परन्तु पुनः रीतेश के ठेलि दैत अछि, रीतेश खसि पड़ैत अछि । शिखा जहर खा लैत अछि। तीत सन स्वादक संकेत दैत आँखि फारि-फारि कऽ देखऽ लगैत अछि।)

रीतेश : *(कनैत)* काकी ई की कएलहुँ ?

(शिखा निशा लागल जकाँ झुलैत-झुलैत कुर्सी पर बैसि जाइत अछि आ टेबुल पर माथ रखैत अछि।---रीतेश भागि कऽ बाहर जाए चाहैत अछि। सामने मे रामलाल अबैत अछि।)

रामलाल : *(रीतेश के पकड़ि।)* कतय भागल जाइ छी।

रीतेश : *(कनैत)* काकी.....जहर.?.......

रामलाल : खाए दिअनु। जेहन करनी तेहन भरनी।

रीतेश : नहि, हिनका बचा लियनु।

रामलाल : भगवान के छोड़ि आर के बचौतनि। आहाँक माय-बाबू कतऽ रहि गेलाह।

रीतेश : ओ सब बाट मे छथि। ककाजी भेटि गेलखिन्ह बस स्टैन्ड पर तैं पहिने डाक्टर लग चलि गेलाह। हिनके लऽ चलियौने।

रामलाल : हिनका लऽ जाकऽ की करबऽ ? भगवान के जे मंजूर हेतनि सैह हेतै।

(रीतेश के कान मे किछु कहै छथि आ दुनू गोटे बाहर जाइत अछि।)

(शिखा के जेना निशाक झोंक उठल हो, मुड़ी उठबैत अछि।)

शिखा : *(शीशी हाथ मे लैत)* हम जीति गेलहुँ। अपन जीवन लीला समाप्त कऽ देखा देलियनि.......मुदा.....। मृत्यु .....? आश्चर्य....... कहाँ ? *(अपना दिश देखैत)* हम जीविते छी .... ? ई की भेलै ? जहर सेहो हमरा जीवनदान किएक

देलक ? किएक ? *(कानय लगैत अछि)* भरिसक हम जीवऽ चाहै छी , जीवन चाही, मृत्यु नहि। शान्ति चाही, पलायन नहि । मुदा आब ... *(छटपट करैछ)* आब हम कोना जीव। हमरा बचा लिअ *(हाथ जोड़ि)* हे प्राणनाथ, हमरा क्षमा कऽ दिअ। *(बोल लटपटाइत छै)* हम ... आहाँके कलंकित ... कऽ कऽ जा रहल छी। *(पुनः कुर्सी पर बैसि टेबुल पर माथ खसा।)*

(समीर आ सुशीला दौड़ि कऽ अबैत अछि। शोभन हाथ मे अटैची नेने अबैत। मंत्रेश्वर के रामलाल आ रीतेश सहारा देने आबि रहल अछि आ कात मे बैसि जाइछ। पाछु सँ झोड़ा-झपटा लऽ श्यामलक प्रवेश)

सुशीला : *(हिलबैत)* कनियाँ, कनियाँ...... । *(जोर सँ कनैत)* कनियाँ, ई की केलहुँ ? रुपयाक खातिर जान दऽ देलहुँ, रुपया तऽ हाथक मैल छै। आहाँ अन्याय केलहुँ कनियाँ, अन्याय।

समीर : आहाँ क्रोध मे एहन पागल भऽ जायब, आशा नहि छल शिखा। आहाँक गहना नहि बेचलौं। हमरा रुपयाक जोगार भऽ गेल। *(सिसकि कऽ कानऽ लगैछ।)*

मंत्रेश्वर : हमरा बचेबाक खातिर आहाँ जान दऽ देलहुँ कनियाँ। छीः-छीः । पढ़ि लिखि कऽ इएह सिखलौं। हे भगवान ! हमरा ई देखबा सँ पहिने मृत्यु किए नहि दऽ देलहुँ।

(रामलाल आ रीतेश आँखि मिलबैत अछि श्यामल कान्त देखि आश्चर्यित होइत , डाक्टर साहेब अबै छथि समीर बैसऽ लए दै छनि। आला सँ शिखा के देखैत छथि फेर शीशी सँ एकटा गोली बाहर निकालि देखैत छथि।)

डाक्टर : आहाँ सब शान्त रहू किछु नहि बिगरलै।

(सबकियो आश्चर्य सँ देखै छथि। डाकटर साहेब सूइ दैत छथि)

समीर : *(आश्चर्य)* डाक्टर साहेब ! हिनका बचा लिअ।

डाक्टर : हम की बचेबनि ! भगवान बचा लेलखिन्ह। ई जहर नहि छै। नीन्दक गोली छै सेहो सब सँ कम पावरक तै पाँचे

मिनट मे जागि जेतीह। आ ई बचाबक काज केलन्हि रामलाल। *(सब कियो रामलाल दिश तकैत छथि। रामलाल हाथ जोड़ि कऽ ढाढ़ अछि। शिखाके होश आबि रहल छै। मुड़ी उठा कऽ लोकके चिन्हबाक प्रयत्न करैत अछि।)*

रामलाल : सरकार हम अहि घरक अन्न खेने छी। दीदीक डरे हम बहुत अन्यायो केने छी तैं जहन हमरा जहर आनऽ कहलनि तऽ हम फेरा मे पड़ी गेलौंह। आ तखन बहुत सोचलाक बाद ई बुद्धि आयल जे नीन्द के गोली सँ सब काज भए जायत।

समीर : धन्य छी आहाँ ! आहाँक हम बड़ अपमान केने छी ताइ लेल लज्जित छी।

(सुशीला, कनियाँ के सहारा दै छथिन्ह। कनियाँ हाथ जोड़ि कऽ क्षमाक मुद्रा मे ढाढ़ होइत छथि।)

शिखा : *(करुणा स्वर सँ)* अइ अभगली के क्षमा कऽ दिऔ। हम क्षमायोग्यो नहि छी। परन्तु आहाँ घरक पुतोहु छी तै जे दण्ड देब से हमरा स्वीकार अछि। माय–बाप सन देवी–देवता रूपी भइसुर आ दियादनि के हम अपमान केलहुँ।

(सुशीलाक पैर पर कनैत खसैत अछि, सुशीला उठाकऽ छाती सँ लगा कनैत शिखा के समझबैत चुप करैत छथि।)

समीर : *(गहना देखबैत)* आहाँक गहना इएह अछि।

शिखा : नहि चाही हमरा गहना। फेकि दियौ सबके। हमरा सिनेह चाही।

(सुशीला लग जा गोर लगैत अछि। सुशीला शिखा कें गला सँ लगबैत प्रसन्न होइत अछि, मंत्रेश्वर बाबू सेहो खूब प्रसन्न होइत छथि। समीर सबके प्रणाम करैत छथि।)

समीर : भैया, आइ हम बड़ खुश छी। हमरा घरमे हेराएल खुशी अपनहि मोने आपस आबि गेल। भैया आहाँक भाबहु

ठीक भऽ गेलथि। आहाँ सबकें स्वीकार केलथि। हुनका क्षमा कऽ दै जइअन्हु।

(शिखा बदलल खुशी मे हसैत अछि।)

मंत्रेश्वर : समीर, भिनसुरुका बोआएल जँ साँझ मे आपस आबि जाय तऽ ओकरा बौएनाइ नहि कहल जाइत छैक।

शोभन : डाक्टर साहेब, देखू। मंत्रेश्वर भैया के एखन रोगी कहबनि।

डाक्टर : शोभन बाबू, प्रसन्नता एकटा एहन दवाइ थीक जे सबरोग के दबा दैत छैक।

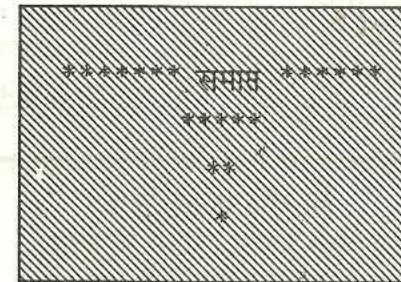
मंत्रेश्वर : सत्ते डाक्टर साहेब, आइ हमरा सब रोगक दबाइ भेटि गेल। हमर सजाओल स्वप्न साकार भऽ गेल। बिछड़ल परिवार एक भऽ गेल। एहि सँ बेसी खुशीक बात हमरा लेल की होएत।

सुशीला : चलै चलू भीतर। थाकल छी बाद मे गप्प करब।

डाक्टर : तहन हमहूँ एखन चलैत छी।

समीर : डाक्टर साहेब, जाइत छी, ठीक अछि। आब देरी आहाँ दिश सँ अछि। आपरेशनक तैयारी करू जा कऽ। हम टाकाक तैयारी ककऽ आयल छी।

(सब जायक उपक्रम मे क्रमबद्ध ठाढ़ भऽ जाइ छथि। मंच धीरे-धीरे अन्हार होइछ।)



पत्राचारक पता

आनन्द कुमार झा
13/16-B विशेश्वर बनर्जी लेन,
कदमतल्ला, ह्वड़ा- 711 101

पोथी प्राप्त करबाक पता

श्री अभयकान्त झा
बैंक ऑफ बड़ौदा
4, ब्रेबर्न रोड, कोलकाता - 1

श्री शंकर चौधरी (एडभोकेट)
पटना उच्च न्यालय
ईस्ट बोरिंग कनाल रोड
विष्णु पैलेस, पटना

श्री विक्रम कुमार झा
बी-50, दुर्गा विहार,
नई दिल्ली-62
Mob : 011-2005-0744

श्री त्रिलोक कुमार झा
ग्राम - मेंहथ (दक्षिणबाड़ी टोल)
झंझारपुर, मधुबनी

मिश्रा मैगजीन सेन्टर
श्री अमरेन्द्र कुमार मिश्र
शंकर चौक, मधुबनी, बिहार

नवीन प्रकाशन
9-B, सिकदर पाड़ा स्ट्रीट,
कोलकाता-700 007
✆ 2238-4201

श्री राज कुमार मिश्र
बैंक ऑफ इन्डिया (अंचल कार्यालय)
प्रधान टावर्स, मेन रोड, राँची - 834 001